Quick word tests

तरक़्क़ी	तरक़्क़ी	आह्लाद	आह्नाद	फ्रीज	फ्रीज	मग्ज	मग्ज	हृत्स्थल	हत्स्थल	सिर्फ	सिर्फ
ज़्यादा	ज़्यादा	ब्राह्मण	ब्राह्मण	ह्रितिक	ह्रितिक	सम्यग्ज्ञान	सम्यग्ज्ञान	ज्योत्स्रा	ज्योत्स्ना	व्हिस्की	व्हिस्की
मन्ज़ूर	मन्जूर	मिस्त्री	मिस्त्री	एल्ज़े	एल्जे	दिग्दर्शन	दिग्दर्शन	ईषत्स्पृष्ट्	ईषत्स्पृष्ट्	इश्क	इश्क
इलेक्ट्रान	इलेक्ट्रान	दुष्प्रह्य	दुष्प्रह्य	उत्त्य	उत्त्य	पंक्ति	पंक्ति	उत्स्रुत	उत्सुत	प्रश्न	प्रश्न
स्ट्रीटकार	स्ट्रीटकार	अद्भुत	अद्भुत	उत्य	उत्य	मंगलवार	मंगलवार	सद्गति	सद्गति	रुश्द	रुश्द
छुट्टी	छुट्टी	इल्ज़ाम	इल्जाम	रत	रत्न	दुर्लंघ्य	दुर्लंघ्य	सद्गन्थ	सद्ग्रन्थ	वैशिष्ट्य	वैशिष्ट्य
महाराष्ट्र	महाराष्ट्र	अक्षरे	अक्षरे	सज़्स	सज्स	पच्चीस	पच्चीस	उद्घाटन	उद्घाटन	ओष्ठ्य	ओष्ठ्य
ज्येष्ठ	ज्येष्ठ	ज्ञान	ज्ञान	एज्जा	एज्जा	अच्छा	अच्छा	ज़िद्दी	ज़िद्दी	मिस्त्री	मिस्त्री
दर्ष्टांत	दर्शत	मौके	मौके	ब्यर्थे	ब्यर्थै	उज्र	उज़	प्रसिद्ध	प्रसिद्ध	आह्वान	आह्वान
चिट्ठी	चिट्ठी	कैंटोमेंट	कैंटोमेंट	तरक़्क़ी	तरक़्क़ी	संस्कृत	संस्कृत	उद्बोध	उद्बोध	आह्लाद	आह्नाद
वाङ्मय	वाङ्मय	छूट कुछ	छूट कुछ	फ्रैक्चर	फ्रेक्चर	हिंस्र	हिंस्र	द्रव	द्रव	ह्रास	ह्रास
वैशिष्ट्य	वैशिष्ट्य	करेंट	करेंट	डॉक्टर	डॉक्टर	छुट्टी	छुट्टी	दारिद्य	दारिद्र्य	अंकुड़ा	अंकुड़ा
पुनस्स्थापना	पुनस्स्थापना	राष्ट्रून	राष्ट्रून	इलेक्ट्रॉन	इलेक्ट्रॉन	चिट्ठी	चिद्री	अध्रुव	अध्रुव	अंतर्निहित	अंतर्निहित
स्वास्थ्य	स्वास्थ्य	कॉफी	कॉफी	रक्त	रक्त	विशाखपट्नम		मंज़ूर	मंज़ूर	अन्तः	अन्तः
कम्प्यूटर	कम्प्यूटर	हिंदू-मुस्लिम	। हिंदू-मुस्लिम	वक्त	वक्त्र	ट्रैन	ट्रैन	मंत्री	मंत्री	अंतर्वेशन	अंतर्वेशन
सान्ध्य	सान्ध्य	करणाऱ्या	करणाऱ्या	युक्त्यभास	युक्त्यभास	सुपाठ्य	सुपाठ्य	स्वातंत्र्य	स्वातंत्र्य	अग्नि	अग्नि
इज़ात	इज़्जत	स्रेह	स्नेह	वक्फ़	वक्फ	लड्डू	लडू	द्वंद्व	दंद	अद्भुत	अद्भुत
उज्ज्वल	उज्ज्वल	श्री	श्री	शुक्ल	शुक्ल	ब्रह्मण्य	ब्रह्मण्य	उन्नीस	उन्नीस	छुछुंदर	छुछुंदर
प्राप्त्याशा	प्राप्त्याशा	स्त्री	स्त्री	रिक्शा	रिक्शा	उत्क्रम	उत्क्रम	इंस्टिट्यूट	इंस्टिट्यूट	हुंकार	हुंकार
इकत्तीस	इकत्तीस	ध्ड्यां	ध्ह्यां	पक्ष	पक्ष	उत्क्षेप	उत्क्षेप	उन्हें	उन्हें	हित इच्छुक	हित इच्छुक
सत्रह	सत्रह	शक्ति	शक्ति	लक्ष्मी	लक्ष्मी	विद्युत्प्रहक	विद्युत्प्रहक	दीन्ह्यो	दीन्ह्यो	कुर्री	कुरी
पद्म	पद्म	महाराष्ट्र	महाराष्ट्र	अभक्ष्य	अभक्ष्य	महत्त्व	महत्त्व	नैप्स्यून	नैप्स्यून	कुल्हिया	कुल्हिया
विद्यार्थी	विद्यार्थी	कटू	कट्टू	दिक्स्थापन	दिक्स्थापन	पत्थर	पत्थर	प्राप्त	प्राप्त		
उन्नीस	उन्नीस	रूप	रूप	सख़्त	संख्त	विद्युत्दर्शी	विद्युत्दर्शी	सब्ज़ी	सब्जी		
पश्चिम	पश्चिम	कू	عماد	अख्त्यार	अख्त्यार	पत्नी	पत्नी	छब्बीस	छब्बीस		
श्रीलंका	श्रीलंका	बुत्तो	बुत्तो	ज़ख़्म	ज़ख	सपल्य	सपत्न्य	मार्किट	मार्किट		
विश्वविद्यालय	विश्वविद्यालय	बार्गी	बार्गी	ख्रिष्टां	ख्रिष्टां	उत्प्रवास	उत्प्रवास	दुर्ज़ेय	दुर्ज्ञेय		
स्नान	स्नान	कुंग	कुंग	फ़रव्र	फ़ख़	त्याहिक	त्र्याहिक	उर्दू	उर्दू		
बुद्ध	बुद्ध	हूप	हूप	अग्ग्रास	अग्ग्रास	विद्युतशक्ति	विद्युतशक्ति	निर्द्वन्द्व	निर्द्धन्द्व		

January 10, 2015 6:55 PM

चक्रव्यूह से निकालती है गीता

जीवन में जब भी संकट आता है, गीता में श्रीकृष्ण द्वारा दिया गया उपदेश हमें इस चक्रव्यूह से बाहर निकालने का रास्ता दिखाता है। गीता जयंती (2 दिसंबर) पर चिंतन...

मद्भवद्गीता के अध्याय 16 के श्लोक 24 में कहा गया है - तस्माच्छास्त्रं प्रमाणं ते कार्याकार्यव्यवस्थितौ॥ अर्थात तेरे लिए इस कर्तव्य और अकर्तव्य की व्यवस्था में शास्त्र ही प्रमाण हैं। यानी हमारे कार्य-व्यवहार को शास्त्र सही राह दिखाते हैं। श्रीमद्भगवद्गीता भी शास्त्र है, जो हमें जीवन के चक्रव्यूह से बाहर निकालती है।

आप जब भी हवाई जहाज की यात्रा करते हैं तो आपको हमेशा विमान परिचारिका विमान उड़ने से पहले कुछ महत्वपूर्ण सूचनाएं देती है। उन सूचनाओं में सबसे प्रमुख है कि विमान में कितने निकास द्वार अर्थात एक्जिट डोर हैं। भले ही आपने जीवन में कई बार हवाई यात्राएं की होंगी, फिर भी हर बार आपको सुरक्षा नियम बताए जाते हैं। आपने शायद एक बार भी उन निकास द्वारों का प्रयोग न किया हो, परंतु आपातकाल में उनका प्रयोग करने की सलाह दी जाती है। इसी तरह जीवन की उड़ान में भी हमारे पास एक्जिट पॉलिसी अर्थात निकास पद्धति होनी ही चाहिए।

आमतौर पर आप अपनी कार का, घर का तथा घर की वस्तुओं का भी बीमा कराते हैं, क्योंकि आप चाहते हैं कि इन वस्तुओं को कोई नुकसान न पहुंचे, परंतु अगर कुछ हो भी जाए तो आप नुकसान के उस

झटके को सहने में सक्षम हो सकें। हम बात कर रहे हैं दुख झेलने की उस क्षमता की, जो दुख के आने से पहले हमारे भीतर पैदा हो जाती है। दुख अगर बताकर आए तो सहना आसान है, परंतु यदि एकदम आ जाए तो मुश्किल आ जाती है। उदाहरण के लिए, यदि आपको मालूम हो कि कल सप्लाई का पानी नहीं आएगा, तो आप अपने आपको इसके लिए तैयार कर सकते हैं, पर अगर बिना सूचना के अचानक पानी चला जाए तो उसे झेलना काफी मुश्किल हो जाता है। आर्थिक समस्याओं के लिए तो हम अक्सर तैयार रहते हैं, शारीरिक स्तर पर भी हम कुछ हद तक स्वयं को सक्षम बना लेते हैं, पर प्रहार जब मन पर होता है तो हमारे पास कोई भी एक्जिट पॉलिसी अर्थात उस समस्या से निकलने का द्वार नजर नहीं आता। ऐसे में हम उन लोगों की शरणागित जाते हैं जो ख़ुद अपनी समस्याओं में उलझे हुए होते हैं। किसी शायर ने कहा है, 'थामा था उनका हाथ जो ख़ुद ढूंढते थे सहारा। इसीलिए कहा जाता है कि जब भी आप खुद को संकट की स्थिति में पाएं, तो शास्त्रों का सहारा लीजिए। जब किसी शब्द की स्पेलिंग या अर्थ पर आप अटकते हैं तो शब्दकोश की शरण में जाते हैं, फिर शब्दकोश में जो भी लिखा हो उसको आप अक्षर-अक्षर स्वीकार करते हैं।

हमारा जीवन एक तरह का महाभारत ही है और हम सब इसमें अभिमन्यु की तरह हैं, जिसे कठिनाइयों के चक्रव्यूह में आना तो आता है, पर निकलना नहीं आता। इस जीवन के चक्रव्यूह से निकलना तथा निकालना आता है भगवान कृष्ण की वाणी गीता को, परंतु आज हम गीता से बहुत दूर चले गए हैं।

ताजा खबरें, फोटो, वीडियो व लाइव स्कोर देखने के लिए क्लिक करें m.jagran.com पर

चक्रव्यूह से निकालती है गीता

जीवन में जब भी संकट आता है, गीता में श्रीकृष्ण द्वारा दिया गया उपदेश हमें इस चक्रव्यूह से बाहर निकालने का रास्ता दिखाता है। गीता जयंती (2 दिसंबर) पर चिंतन...

मद्गवद्गीता के अध्याय 16 के श्लोक 24 में कहा गया है - तस्माच्छास्त्रं प्रमाणं ते कार्याकार्यव्यवस्थितौ॥ अर्थात तेरे लिए इस कर्तव्य और अकर्तव्य की व्यवस्था में शास्त्र ही प्रमाण हैं। यानी हमारे कार्य-व्यवहार को शास्त्र सही राह दिखाते हैं। श्रीमद्भगवद्गीता भी शास्त्र है, जो हमें जीवन के चक्रव्यूह से बाहर निकालती है।

आप जब भी हवाई जहाज की याला करते हैं तो आपको हमेशा विमान परिचारिका विमान उड़ने से पहले कुछ महत्वपूर्ण सूचनाएं देती है। उन सूचनाओं में सबसे प्रमुख है कि विमान में कितने निकास द्वार अर्थात एक्जिट डोर हैं। भले ही आपने जीवन में कई बार हवाई यालाएं की होंगी, फिर भी हर बार आपको सुरक्षा नियम बताए जाते हैं। आपने शायद एक बार भी उन निकास द्वारों का प्रयोग न किया हो, परंतु आपातकाल में उनका प्रयोग करने की सलाह दी जाती है। इसी तरह जीवन की उड़ान में भी हमारे पास एक्जिट पॉलिसी अर्थात निकास पद्धित होनी ही चाहिए।

आमतौर पर आप अपनी कार का, घर का तथा घर की वस्तुओं का भी बीमा कराते हैं, क्योंकि आप चाहते हैं कि इन वस्तुओं को कोई नुकसान न पहुंचे, परंतु अगर कुछ हो भी जाए तो आप नुकसान के उस

झटके को सहने में सक्षम हो सकें। हम बात कर रहे हैं दुख झेलने की उस क्षमता की, जो दुख के आने से पहले हमारे भीतर पैदा हो जाती है। दुख अगर बताकर आए तो सहना आसान है, परंतु यदि एकदम आ जाए तो मुश्किल आ जाती है। उदाहरण के लिए, यदि आपको मालूम हो कि कल सप्लाई का पानी नहीं आएगा, तो आप अपने आपको इसके लिए तैयार कर सकते हैं, पर अगर बिना सूचना के अचानक पानी चला जाए तो उसे झेलना काफी मुश्किल हो जाता है। आर्थिक समस्याओं के लिए तो हम अक्सर तैयार रहते हैं, शारीरिक स्तर पर भी हम कुछ हद तक स्वयं को सक्षम बना लेते हैं, पर प्रहार जब मन पर होता है तो हमारे पास कोई भी एक्जिट पॉलिसी अर्थात उस समस्या से निकलने का द्वार नजर नहीं आता। ऐसे में हम उन लोगों की शरणागित जाते हैं जो ख़ुद अपनी समस्याओं में उलझे हुए होते हैं। किसी शायर ने कहा है, 'थामा था उनका हाथ जो ख़ुद ढूंढते थे सहारा। इसीलिए कहा जाता है कि जब भी आप खुद को संकट की स्थिति में पाएं, तो शास्त्रों का सहारा लीजिए। जब किसी शब्द की स्पेलिंग या अर्थ पर आप अटकते हैं तो शब्दकोश की शरण में जाते हैं, फिर शब्दकोश में जो भी लिखा हो उसको आप अक्षर-अक्षर स्वीकार करते हैं।

हमारा जीवन एक तरह का महाभारत ही है और हम सब इसमें अभिमन्यु की तरह हैं, जिसे कठिनाइयों के चक्रव्यूह में आना तो आता है, पर निकलना नहीं आता। इस जीवन के चक्रव्यूह से निकलना तथा निकालना आता है भगवान कृष्ण की वाणी गीता को, परंतु आज हम गीता से बहुत दूर चले गए हैं।

ताजा खबरें, फोटो, वीडियो व लाइव स्कोर देखने के लिए क्लिक करें m.jagran.com पर

गुदगुदी | शायरी | टेक ज्ञान | Hinglish News | गेम्स | गरमा गरम | Travel | Deals | Property | चुनाव

सेंसेक्स, निफ्टी ठिठके, मिडकैप-स्मॉलकैप में उछाल

बैंक खाते से ज्यादा पैसा निकालने पर देना होगा टैक्स!

कंस्ट्रक्शन क्षेत्र को मिलेगा विदेशी पूंजी का टॉनिक

रंग लाई पीएम मोदी की मेहनत, चीन से आया तोहफा

पेट्रोल, डीजल पर उत्पाद शुल्क बढ़ा, नहीं बढ़ेंगे दाम

मोदी के दीवाने हुए दुनियाभर के निवेशक

बीड़ी-सिगरेट पर अब नहीं होगी सख्ती

पर्सन ऑफ द ईयर की दौड़ में मोदी फिर अव्वल

स्वागत के दौरान राहुल के सामने लगे 'प्रियंका-प्रियंका' के नारे

कंस्ट्रक्शन क्षेत्र को मिलेगा विदेशी पूंजी का टॉनिक

उप्र में अंधेरा दूर करने के लिए ताक पर राजनीति

कर्नाटक व गुजरात में दो अबोध बच्चियों से दुष्कर्म सेंसेक्स, निफ्टी ठिठके, मिडकैप-स्मॉलकैप में उछाल

बैंक खाते से ज्यादा पैसा निकालने पर देना होगा टैक्स!

कंस्ट्रक्शन क्षेत्र को मिलेगा विदेशी पंजी का टॉनिक

रंग लाई पीएम मोदी की मेहनत, चीन से आया तोहफा

पेट्रोल, डीजल पर उत्पाद शुल्क बढ़ा, नहीं बढ़ेंगे दाम

मोदी के दीवाने हुए दुनियाभर के निवेशक

बीड़ी-सिगरेट पर अब नहीं होगी सख्ती

पर्सन ऑफ द ईयर की दौड़ में मोदी फिर अव्वल

स्वागत के दौरान राहुल के सामने लगे 'प्रियंका-प्रियंका' के नारे

कंस्ट्रक्शन क्षेत्र को मिलेगा विदेशी पूंजी का टॉनिक

उप्र में अंधेरा दूर करने के लिए ताक पर राजनीति

कर्नाटक व गुजरात में दो अबोध बच्चियों से दुष्कर्म

119 देशों के बच्चों ने UAE का राष्ट्रगान गाकर बनाया रिकॉर्ड

केवल 6 सेकेंड में 'आउट ऑफ स्टॉक' हुआ जियाओमी रेडमी नोट

चीनी एपल कही जाने वाली कंपनी जियाओमी का पहला फैबलेट 'जियाओमी रेडमी नोट' आज पहली बार ऑनलाइन साइट फ्लिपकार्ट पर बिक्री के लिए उतारा गया था जिसका नतीजा यह हुआ कि केवल 6 सेकेंड में सारे हेंडसेट बिक गए।

आज दोपहर ठीक 2 बजे सेल शुरू होने के 6 सेकेंड में ही पूरे 50,000 जियाओमी रेडमी नोट हेंडसेट बिक गए जिसके बाद फ्लिपकार्ट पर 'आउट ऑफ स्टॉक' का मेसेज आने लगा।

जियाओमी के इससे पहले भारत में आए डिवाइस एमआई3 और रेडमी 1एस स्मार्टफोन की तरह ही जियाओमी रेडमी नोट ने भी अपनी पहले सेल में एक रेकार्ड कायम किया है।

जियओमी रेडमी नोट की विशेषताएं

रेडमी नोट में 5.5 इंच का डिस्प्ले है जो कि 720x1280 पिक्सल का रेजोल्यूशन प्रदान करने में सक्षम है। कंपनी द्वारा डिस्प्ले को कॉर्निंग गोरिल्ला ग्लास3 की सुरक्षा भी दी गई है। इसके अलावा इसमें 1.7 गीगा हट्जें मीडियाटेक ऑक्टा-कोर एमटी 6992 प्रोसेसर, माली-420 जीपीयू, 2जीबी रैम, 3,100 एमएएच की बैटरी, 8 जीबी का इंटरनल स्टोरेज व तस्वीरें लेने के लिए 13 मेगापिक्सल का रियर और 5 मेगा-पिक्सल का फ्रंट कैमरा है।

जियओमी रेडमी नोट भारतीय बाजार में दो वेरिएंट- डुअल सिम (2जी + 3जी) और सिंगल सिम (4जी कनेक्टिविटी) वेरिएंट में आया है जिसमें से आज केवल डुअल सिम वेरिएंट को ही फ्लिपकार्ट पर बिक्री के लिए उतारा गया था।

पढ़े - भारत आया वनप्लस वन स्मार्टफोन, जानिए फीचर्स

चीनी एपल कही जाने वाली कंपनी जियाओमी का पहला फैबलेट 'जियाओमी रेडमी नोट' आज पहली बार ऑनलाइन साइट फ्लिपकार्ट पर बिक्री के लिए उतारा गया था जिसका नतीजा यह हुआ कि केवल 6 सेकेंड में सारे हेंडसेट बिक गए।

आज दोपहर ठीक 2 बजे सेल शुरू होने के 6 सेकेंड में ही पूरे 50,000 जियाओमी रेडमी नोट हेंडसेट बिक गए जिसके बाद फ्लिपकार्ट पर 'आउट ऑफ स्टॉक' का मेसेज आने लगा।

जियाओमी के इससे पहले भारत में आए डिवाइस एमआई3 और रेडमी 1एस स्मार्टफोन की तरह ही जियाओमी रेडमी नोट ने भी अपनी पहले सेल में एक रेकार्ड कायम किया है।

जियओमी रेडमी नोट की विशेषताएं

रेडमी नोट में 5.5 इंच का डिस्प्ले है जो कि 720x1280 पिक्सल का रेजोल्यूशन प्रदान करने में सक्षम है। कंपनी द्वारा डिस्प्ले को कॉर्निंग गोरिल्ला ग्लास3 की सुरक्षा भी दी गई है। इसके अलावा इसमें 1.7 गीगा हुर्ट्ज मीडियाटेक ऑक्टा-कोर एमटी 6992 प्रोसेसर, माली-420 जीपीयू, 2जीबी रैम, 3,100 एमएएच की बैटरी, 8 जीबी का इंटरनल स्टोरेज व तस्वीरें लेने के लिए 13 मेगापिक्सल का रियर और 5 मेगापिक्सल का फ्रंट कैमरा है।

जियओमी रेडमी नोट भारतीय बाजार में दो वेरिएंट- डुअल सिम (2जी + 3जी) और सिंगल सिम (4जी कनेक्टिविटी) वेरिएंट में आया है जिसमें से आज केवल डुअल सिम वेरिएंट को ही फ्लिपकार्ट पर बिक्री के लिए उतारा गया था।

पढ़े - भारत आया वनप्लस वन स्मार्टफोन, जानिए फीचर्स

तीन मिररलेस कैमरे के साथ आया निकॉन

Publish Date:Mon, 01 Dec 2014 10:12 AM (IST) | Updated Date:Mon, 01 Dec 2014 11:35 AM (IST)

नई दिल्ली। निकॉन ने 1 सीरीज के कैमरे- निकॉन 1 एडब्ल्यू1, निकॉन 1 वी3 और निकॉन 1 जे4 को किट लेंसेज के साथ क्रमश: 39.950 रुपये. 43.950 रुपये और 24.950 रुपये में लांच किया है। इन तीन कैमरों में से वी3 और जे4 की घोषणा इस साल के मार्च और अप्रैल माह में की गयी थी जबकि एडब्ल्यू1 की घोषणा सितंबर, 2013 में ही कर दी गयी थी। इन तीनों कैमरे की बिक्री इस माह के अंत तक शुरू कर दी जाएगी। निकॉन के अनुसार एडब्ल्यू 1 दुनिया का पहला वाटरप्रूफ और शॉकप्रूफ मिररलेस कैमरा है। इसमें 14.2 मेगापिक्सल सीएएक्स-फार्मेट सीमॉस सेंसर और उच्च क्वालिटी के इमेज के लिए निकॉन का एक्सपीड 3ए इमेज प्रोसेसिंग इंजन लगा है। साथ ही इसमें वाइड आइएसओ रेंज [164 से 6400] लगा है जिससे किसी भी तरह की रोशनी में अच्छी तस्वीरें आ सकती हैं। यह कैमरा निकॉन के एडवांस हाइब्रिड ऑटोफोकस सिस्टम के साथ आया है, जो आपके मविंग एक्शन को कैप्चर कर सकता है। 11-27.5मिमी एफ/3.5-5.6 किट के साथ आने वाले निकॉन 1 एडब्ल्यू1 की कीमत 39,950 रुपये रखी गयी है। दूसरा कैमरा है निकॉन वी3 जो काफी हल्के वजन का है। 1वी3 में एक्सपीड 4ए इमेज प्रोसेसर के साथ 18.4 एमपी सी-एक्स फार्मेट सीमॉस सेंसर है। इसका आइएसओ रेंज 160 से 12,800 है। इसमें हाइब्रिड एफ सिस्टम लगा है जिसमें 171 कंट्रास्ट-डिफेक्ट एफ प्वाइंट और 105 फेज डिटेक्ट एफ प्वाइंट है। 10-30 मिमी पीडी लेंस किट के साथ आने वाले इस कैमरे की कीमत 43.950 रुपये है। निकॉन 1 जे4 में 1 इंच का 18.4एमपी सीएक्स फार्मेट सेंसर है। निकॉन 1 जे4 में लगा हाइब्रिड एफ सिस्टम इसकी क्वालिटी में इजाफा करता है। 10-30 मिमी पीडी लेंस के साथ काले और सफेद रंग में यह कैमरा 24,950 रुपये में उपलब्ध है।

नई दिल्ली। निकॉन ने 1 सीरीज के कैमरे- निकॉन 1 एडब्ल्य1, निकॉन 1 वी3 और निकॉन 1 जे4 को किट लेंसेज के साथ क्रमश: 39,950 रुपये, 43,950 रुपये और 24,950 रुपये में लांच किया है। इन तीन कैमरों में से वी3 और जे4 की घोषणा इस साल के मार्च और अप्रैल माह में की गयी थी जबकि एडब्ल्य्1 की घोषणा सितंबर, 2013 में ही कर दी गयी थी। इन तीनों कैमरे की बिक्री इस माह के अंत तक शुरू कर दी जाएगी। निकॉन के अनुसार एडब्ल्यु 1 दनिया का पहला वाटरप्रुफ और शॉकप्रुफ मिररलेस कैमरा है। इसमें 14.2 मेगापिक्सल सीएएक्स-फार्मेट सीमॉस सेंसर और उच्च क्वालिटी के इमेज के लिए निकॉन का एक्सपीड 3ए इमेज प्रोसेसिंग इंजन लगा है। साथ ही इसमें वाइड आइएसओ रेंज [164 से 6400] लगा है जिससे किसी भी तरह की रोशनी में अच्छी तस्वीरें आ सकती हैं। यह कैमरा निकॉन के एडवांस हाइब्रिड ऑटोफोकस सिस्टम के साथ आया है, जो आपके मुविंग एक्शन को कैप्चर कर सकता है। 11-27.5मिमी $\sqrt{\frac{3.5-5.6}{6}}$ किट के साथ आने वाले निकॉन 1 एडब्ल्यू 1 की कीमत 39,950 रुपये रखी गयी है। दसरा कैमरा है निकॉन वी3 जो काफी हल्के वजन का है। 1वी3 में एक्सपीड 4ए इमेज प्रोसेसर के साथ 18.4 एमपी सी-एक्स फार्मेट सीमॉस सेंसर है। इसका आइएसओ रेंज 160 से 12,800 है। इसमें हाइब्रिड एफ सिस्टम लगा है जिसमें 171 कंटास्ट-डिफेक्ट एफ प्वाइंट और 105 फेज डिटेक्ट एफ प्वाइंट है। 10-30 मिमी पीडी लेंस किट के साथ आने वाले इस कैमरे की कीमत 43,950 रुपये है। निकॉन 1 जे4 में 1 इंच का 18.4एमपी सीएक्स फार्मेट सेंसर है। निकॉन 1 जे4 में लगा हाइब्रिड एफ सिस्टम इसकी क्वालिटी में इजाफा करता है। 10-30 मिमी पीड़ी लेंस के साथ काले और सफेद रंग में यह कैमरा 24,950 रुपये में उपलब्ध है।

बेंगलुरू। आइपीएल-7 फाइनल में जीत के बाद इस टीम के सभी खिलाड़ी जश्न में डूबे दिख़े, आखिर ये उनका दूसरा खिताब जो है वहीं अगर टीम के सबसे सफल गेंद्रबाज व टूर्नामेंट में 21 विकेट लेकर इस मामले में दूसरे नंबर पर रहने वाले कैरेबियाई स्पिनर सुनील नरेन की मानें तो इस बार की जीत, 2012 की खिताबी जीत से ज्यादा संतोषजनक है। नरेन ने कहा, 'ये साल और बेहतर था क्योंकि हमने 200 के लक्ष्य को हासिल किया जो कि आसान काम नहीं है। लड़कों ने इस जीत के लिए कड़ी मेहनत की थी और वे इस लम्हे के हकदार हैं। इस साल हमारी शुरुआत अच्छी नहीं रही लेकिन हमने लगातार नौ जीत हासिल करके टूर्नामेंट का अंत किया जो अद्भुत है। एक बार खिताब जीतना शानदार होता है लेकिन दो बार इसको अपने नाम करना एक अद्भुत

बंगलुरू। आइपीएल-7 फाइनल में जीत के बाद इस टीम के सभी खिलाड़ी जश्न में इबे दिखे, आखिर ये उनका दूसरा खिताब जो है वहीं अगर टीम के सबसे सफल गेंदबाज व दूर्नामेंट में 21 विकेट लेकर इस मामले में दूसरे नंबर पर रहने वाले कैरेबियाई स्पिनर सुनील नरेन की मानें तो इस बार की जीत, 2012 की खिताबी जीत से ज्यादा संतोषजनक है। नरेन ने कहा, 'ये साल और बेहतर था क्योंकि हमने 200 के लक्ष्य को हासिल किया जो कि आसान काम नहीं है। लड़कों ने इस जीत के लिए कड़ी मेहनत की थी और वे इस लम्हे के हकदार हैं। इस साल हमारी शुरुआत अच्छी नहीं रही लेकिन हमने लगातार नौ जीत हासिल करके टूर्नामेंट का अंत किया जो अद्भुत है। एक बार खिताब जीतना शानदार होता है लेकिन दो बार इसको अपने नाम करना एक अद्भुत सफलता है और शानदार अहसास है। केकेआर का हिस्सा बनकर बहुत अच्छा महसूस होता है और

फोटो में देखें, क्या हुआ जब ग्रांड फैशन इंवेट में Bollywood Divas ने रैंप पर उतरकर बिखेरे जलवे

गौरव गाथा

हिन्दी साहित्य को अपने अस्तित्व से गौरवान्वित करने वाली विशेष कहानियों के इस संग्रह में प्रस्तुत है— सैय्यद इंशा अल्ला खाँ की 'रानी केतकी की कहानी'। यह संभवत: खड़ी बोली की पहली कहानी है और इसका रचनाकाल १८०३ ईस्वी के आसपास माना जाता है।

यह वह कहानी है कि जिसमें हिंदी छुट।

और न किसी बोली का मेल है न पुट।।

सिर झुकाकर नाक रगड़ता हूँ उस अपने बनानेवाले के सामने जिसने हम सब को बनाया और बात में वह कर दिखाया कि जिसका भेद किसी ने न पाया। आतियाँ जातियाँ जो साँसें हैं, उसके बिन ध्यान यह सब फाँसे हैं। यह कल का पुतला जो अपने उस खेलाड़ी की सुध रक्खे तो खटाई में क्यों पड़े और कड़वा कसैला क्यों हो। उस फल की मिठाई चक्खे जो बड़े से बड़े अगलों ने चक्खी है।

देखने को दो आँखें दीं और सुनने के दो कान।

नाक भी सब में ऊँची कर दी मरतों को जी दान।।

मिट्टी के बासन को इतनी सकत कहाँ जो अपने कुम्हार के करतब कुछ ताड़ सके। सच है, जो बनाया हुआ हो, सो अपने बनानेवालों को क्या सराहे और क्या कहे। यों जिसका जी चाहे, पड़ा बके। सिर से लगा पाँव तक जितने रोंगटे हैं, जो सबके सब बोल उठें और सराहा करें और उतने बरसों उसी ध्यान में रहें जितनी सारी निदयों में रेत और फूल फलियाँ खेत में हैं, तो भी कुछ न हो सके, कराहा करैं। इस सिर झुकाने के साथ ही दिन रात जपता हूँ उस अपने दाता के भेजे हुए प्यारे को जिसके लिये यों कहा है -

जो तू न होता तो मैं कुछ न बनाता; और उसका चचेरा भाई जिसका ब्याह उसके घर हुआ, उसकी सुरत मुझे लगी रहती है। मैं फूला अपने आप में नहीं समाता, और जितने उनके लड़के वाले हैं, उन्हीं को मेरे जी में चाह है। और कोई कुछ हो, मुझे नहीं भाता। मुझको उम्र घराने छूट किसी चोर ठग से क्या पड़ी! जीते और मरते आसरा उन्हीं सभों का और उनके घराने का रखता हूँ तीसों घड़ी।

डौल डाल एक अनोखी बात का

एक दिन बैठे-बैठे यह बात अपने ध्यान में चढ़ी कि कोई कहानी ऐसी किहए कि जिसमें हिंदवी छुट और किसी बोली का पुट न मिले, तब जाके मेरा जी फूल की कली के रूप में खिले। बाहर की बोली और गँवारी कुछ उसके बीच में न हो। अपने मिलने वालों में से एक कोई पढ़े-लिखे, पुराने-धुराने, डाँग, बूढ़े धाग यह खटराग लाए। सिर हिलाकर, मुँह धुथाकर, नाक भी चढ़ाकर, आँखें फिराकर लगे कहने - यह बात होते दिखाई नहीं देती। हिंदवीपन भी न निकले और भाखापन भी न हो। बस जैसे भले लोग अच्छे आपस में बोलते चालते हैं, ज्यों का त्यों वही सब डौल रहे और छाँह किसी की न हो, यह नहीं होने का। मैंने उनकी ठंडी साँस का टहोका खाकर झुँझलाकर कहा - मैं कुछ ऐसा बड़बोला नहीं जो राई को परबत कर दिखाऊँ और झूठ सच बोलकर उँगलियाँ नचाऊँ, और बे-सिर बे-ठिकाने की उलझी- सुलझी बातें सुनाऊँ, जो मुझ से न हो सकता तो यह बात मुँह से क्यों निकालता? जिस ढब से होता, इस बखेड़े को

गौरव गाथा

हिन्दी साहित्य को अपने अस्तित्व से गौरवान्वित करने वाली विशेष कहानियों के इस संग्रह में प्रस्तुत है— सैय्यद इंशा अल्ला खाँ की 'रानी केतकी की कहानी'। यह संभवत: खड़ी बोली की पहली कहानी है और इसका रचनाकाल १८०३ ईस्वी के आसपास माना जाता है।

यह वह कहानी है कि जिसमें हिंदी छुट।

और न किसी बोली का मेल है न पुट॥

सिर झुकाकर नाक रगड़ता हूँ उस अपने बनानेवाले के सामने जिसने हम सब को बनाया और बात में वह कर दिखाया कि जिसका भेद किसी ने न पाया। आतियाँ जातियाँ जो साँसें हैं, उसके बिन ध्यान यह सब फाँसे हैं। यह कल का पुतला जो अपने उस खेलाड़ी की सुध रक्खे तो खटाई में क्यों पड़े और कड़वा कसैला क्यों हो। उस फल की मिठाई चक्खे जो बड़े से बड़े अगलों ने चक्खी है।

देखने को दो आँखें दीं और सुनने के दो कान।

नाक भी सब में ऊँची कर दी मरतों को जी दान॥

मिट्टी के बासन को इतनी सकत कहाँ जो अपने कुम्हार के करतब कुछ ताड़ सके। सच है, जो बनाया हुआ हो, सो अपने बनानेवालो को क्या सराहे और क्या कहे। यों जिसका जी चाहे, पड़ा बके। सिर से लगा पाँव तक जितने रोंगटे हैं, जो सबके सब बोल उठें और सराहा करें और उतने बरसों उसी ध्यान में रहें जितनी सारी निदयों में रेत और फूल फिलयाँ खेत में हैं, तो भी कुछ न हो सके, कराहा करैं। इस सिर झुकाने के साथ ही दिन रात जपता हूँ उस अपने दाता के भेजे हुए प्यारे को जिसके लिये यों कहा है -

जो तू न होता तो मैं कुछ न बनाता; और उसका चचेरा भाई जिसका ब्याह उसके घर हुआ, उसकी सुरत मुझे लगी रहती है। मैं फूला अपने आप में नहीं समाता, और जितने उनके लड़के वाले हैं, उन्हीं को मेरे जी में चाह है। और कोई कुछ हो, मुझे नहीं भाता। मुझको उम्र घराने छूट किसी चोर ठग से क्या पड़ी! जीते और मरते आसरा उन्हीं सभों का और उनके घराने का रखता हूँ तीसों घड़ी।

डौल डाल एक अनोखी बात का

एक दिन बैठे-बैठे यह बात अपने ध्यान में चढ़ी कि कोई कहानी ऐसी किहए कि जिसमें हिंदवी छुट और किसी बोली का पुट न मिले, तब जाके मेरा जी फूल की कली के रूप में खिले। बाहर की बोली और गँवारी कुछ उसके बीच में न हो। अपने मिलने वालों में से एक कोई पढ़े-लिखे, पुराने-धुराने, डाँग, बूढ़े धाग यह खटराग लाए। सिर हिलाकर, मुँह थुथाकर, नाक भी चढ़ाकर, आँखें फिराकर लगे कहने - यह बात होते दिखाई नहीं देती। हिंदवीपन भी न निकले और भाखापन भी न हो। बस जैसे भले लोग अच्छे आपस में बोलते चालते हैं, ज्यों का त्यों वही सब डौल रहे और छाँह किसी की न हो, यह नहीं होने का। मैंने उनकी ठंडी साँस का टहोका खाकर झूँझलाकर कहा - मैं कुछ ऐसा बड़बोला नहीं जो राई को

टालता।

इस कहानी का कहनेवाला यहाँ आपको जताता है और जैसा कुछ उसे लोग पुकारते हैं, कह सुनाता है। दहना हाथ मुँह पर फेरकर आपको जताता हूँ, जो मेरे दाता ने चाहा तो यह ताव-भाव, राव-चाव और कूद-फाँद, लपट झपट दिखाऊँ जो देखते ही आप के ध्यान का घोड़ा, जो बिजली से भी बहुत चंचल अल्हड़पन में है, हिरन के रूप में अपनी चौकड़ी भूल जाय।

द्रक घोड़े पर चढ़ के अपने आता हूँ मैं।

करतब जो कुछ है, कर दिखता हूँ मैं।।

उस चाहनेवाले ने जो चाहा तो अभी।

कहता जो कुछ हूँ, कर दिखाता हूँ मैं॥

अब आप कान रख के, आँखें मिला के, सन्मुख होके टुक इधर देखिए, किस ढंग से बढ़ चलता हूँ और अपने फूल के पंखड़ी जैसे होठों से किस किस रूप के फूल उगलता हूँ।

कहानी के जीवन का उभार और बोलचाल की दुलहिन का सिंगार

किसी देश में किसी राजा के घर एक बेटा था। उसे उसके माँ-बाप और सब घर के लोग कुँवर उदैभान करके पुकारते थे। सचमुच उसके जीवन की जोत में सूरज की एक स्रोत आ मिली थी। उसका अच्छापन और भला लगना कुछ ऐसा न था जो किसी के लिखने और कहने में आ सके। पंद्रह बरस भरके उसने सोलहवें में पाँव रक्खा था। कुछ यों ही सी मसें भीनती चली थीं। पर किसी बात के सोच का घर-घाट न पाया था और चाह की नदी का पाट उसने देखा न था। एक दिन हिरयाली देखने को अपने घोड़े पर चढ़के अठखेल और अल्हड़पन के साथ देखता भालता चला जाता था। इतने में जो एक हिरनी उसके सामने आई, तो उसका जी लोट पोट हुआ। उस हिरनी के पीछे सब छोड़ छाड़कर घोड़ा फेंका। कोई घोड़ा उसको पा सकता था? जब सूरज छिप गया और हिरनी आँखों से ओझल हुई, तब तो कुँवर उदैभान भूखा, प्यासा, उनींदा, जँभाइयाँ, अँगड़ाइयाँ लेता, हक्का बक्का होके लगा आसरा ढूँढने। इतने में कुछ एक अमराइयाँ देख पड़ी, तो उधर चल निकला; तो देखता है वो चालीस-पचास रंडियाँ एक से एक जोबन में अगली झूला डाले पड़ी झूल रही है और सावन गातियाँ हैं।

ज्यों ही उन्होंने उसको देखा - तू कौन? तू कौन? की चिंघाड़ सी पड़ गई। उन सभों में एक के साथ उसकी आँख लग गई।

कोई कहती थी यह उचक्का है।

कोई कहती थी एक पक्का है।

वहीं झूलेवाली लाल जोड़ा पहने हुए, जिसको सब रानी केतकी कहते थीं, उसके भी जी में उसकी चाह ने घर किया। पर कहने-सुनने को बहत सी नाँह-नूह की और कहा - परबत कर दिखाऊँ और झूठ सच बोलकर उँगलियाँ नचाऊँ, और बे-सिर बे-ठिकाने की उलझी-सुलझी बातें सुनाऊँ, जो मुझ से न हो सकता तो यह बात मुँह से क्यों निकालता? जिस ढब से होता, इस बखेड़े को टालता।

इस कहानी का कहनेवाला यहाँ आपको जताता है और जैसा कुछ उसे लोग पुकारते हैं, कह सुनाता है। दहना हाथ मुँह पर फेरकर आपको जताता हूँ, जो मेरे दाता ने चाहा तो यह ताव-भाव, राव-चाव और कूद-फाँद, लपट झपट दिखाऊँ जो देखते ही आप के ध्यान का घोड़ा, जो बिजली से भी बहुत चंचल अल्हड़पन में है, हिरन के रूप में अपनी चौकड़ी भूल जाय।

टुक घोड़े पर चढ़ के अपने आता हूँ मैं।

करतब जो कुछ है, कर दिखता हूँ मैं॥

उस चाहनेवाले ने जो चाहा तो अभी।

कहता जो कुछ हूँ, कर दिखाता हूँ मैं॥

अब आप कान रख के, आँखें मिला के, सन्मुख होके टुक इधर देखिए, किस ढंग से बढ़ चलता हूँ और अपने फूल के पंखड़ी जैसे होठों से किस किस रूप के फूल उगलता हूँ।

कहानी के जीवन का उभार और बोलचाल की दुलहिन का सिंगार

किसी देश में किसी राजा के घर एक बेटा था। उसे उसके माँ-बाप और सब घर के लोग कुँवर उदैभान करके पुकारते थे। सचमुच उसके जीवन की जोत में सूरज की एक स्रोत आ मिली थी। उसका अच्छापन और भला लगना कुछ ऐसा न था जो किसी के लिखने और कहने में आ सके। पंद्रह बरस भरके उसने सोलहवें में पाँव रक्खा था। कुछ यों ही सी मसें भीनती चली थीं। पर किसी बात के सोच का घर-घाट न पाया था और चाह की नदी का पाट उसने देखा न था। एक दिन हरियाली देखने को अपने घोड़े पर चढ़के अठखेल और अल्हड़पन के साथ देखता भालता चला जाता था। इतने में जो एक हिरनी उसके सामने आई, तो उसका जी लोट पोट हुआ। उस हिरनी के पीछे सब छोड़ छाड़कर घोड़ा फेंका। कोई घोड़ा उसको पा सकता था? जब सूरज छिप गया और हिरनी आँखों से ओझल हुई, तब तो कुँवर उदैभान भूखा, प्यासा, उनींदा, जँभाइयाँ, अँगड़ाइयाँ लेता, हक्का बक्का होके लगा आसरा ढूँढने। इतने में कुछ एक अमराइयाँ देख पड़ी, तो उधर चल निकला; तो देखता है वो चालीस-पचास रंडियाँ एक से एक जोबन में अगली झूला डाले पड़ी झूल रही है और सावन गातियाँ हैं।

ज्यों ही उन्होंने उसको देखा - तू कौन? तू कौन? की चिंघाड़ सी पड़ गई। उन सभों में एक के साथ उसकी आँख लग गई।

कोई कहती थी यह उचक्का है।

कोई कहती थी एक पक्का है।

वही झूलेवाली लाल जोड़ा पहने हुए, जिसको सब रानी केतकी कहते थीं, उसके भी जी में उसकी चाह ने घर किया। पर कहने-सुनने को बहुत सी नाँह-नूह की और कहा -

Consonant spacing	पपहपवपवहवव	Rakar spacing	पपळ्पवपवळ्वव	पपद्वपवपवद्ववव
पपकपवपवकवव	पपक्रपवपवक्रवव		पपक्षपवपवक्षवव	पपद्धपवपवद्धवव
पपखपवपवखवव	पपख़पवपवख़वव	पपक्रपवपवक्रवव	पपञ्चपवपवञ्चवव	पपद्ध्यपवपवद्ध्यवव
पपगपवपवगवव	पपग़पवपवग़वव	पपख्रपवपवख्रवव		पपद्मपवपवद्मवव
पपघपवपवघवव	पपज़पवपवज़वव	पपग्रपवपवग्रवव	Conjunct spacing	पपद्भपवपवद्भवव
पपङ्पवपवङवव	पपड्पवपवड्वव	पपघ्रपवपवघ्रवव		पपद्पवपवद्दवव
पपचपवपवचवव	पपढ़पवपवढ़वव	पपङ्गवपवङ्गवव	पपक्तपवपवक्तवव	पपभापवपवभावव
	पपफ़पवपवफ़वव	पपच्चपवपवच्चवव	पपरुपवपवरुवव -	पपन्मपवपवन्मवव
पपछपवपवछवव	पपयपवपवयवव	पपछ्रपवपवछ्रवव	पपरूपवपवरूवव	पपल्जपवपवल्जवव
पपजपवपवजवव	पपक्षपवपवक्षवव	पपज्रपवपवज्रवव	पपड्यपवपवड्यवव	पपल्थपवपवल्थवव
पपझपवपवझवव	पपज्ञपवपवज्ञवव	पपझपवपवझवव	पपञ्जपवपवञ्जवव	पपल्भपवपवल्भवव
पपञपवपवञवव	·	पपञ्जपवपवञ्जवव	पपज्थपवपवज्थवव	पपल्मपवपवल्मवव
पपटपवपवटवव	Vowel spacing	पपट्रपवपवट्रवव	पपज्यपवपवज्यवव	पपल्यपवपवल्यवव
पपठपवपवठवव		पपठ्रपवपवठ्रवव	पपज्सपवपवज्सवव	पपद्यपवपवद्यवव
पपडपवपवडवव	पपअपवपवअवव	पपड्रपवपवड्रवव	पपछ्यपवपवछ्यवव	पपद्ध्यपवपवद्ध्यवव
पपढपवपवढवव	पपअपवपवअवव	पपद्रपवपवद्रवव	पपट्यपवपवट्यवव	पपद्मपवपवद्मवव
पपणपवपवणवव	पपॲपवपवॲवव	पपण्रपवपवण्रवव	पपठ्यपवपवठ्यवव	पपष्टपवपवष्टवव
पपतपवपवतवव	पपइपवपवइवव	पपत्रपवपवत्रवव	पपड्यपवपवड्यवव	पपन्भपवपवन्भवव
पपथपवपवथवव	पपईपवपवईवव	पपश्रपवपवश्रवव	पपट्यपवपवट्यवव	पपष्ठपवपवष्ठवव
पपदपवपवदवव	पपउपवपवउवव	पपद्रपवपवद्रवव	पपट्टपवपवट्टवव	पपल्जपवपवल्जवव
पपधपवपवधवव	पपऊपवपवऊवव	पपध्रपवपवध्रवव	पपद्रपवपवद्रवव	पपह्नपवपवह्नवव
पपनपवपवनवव	पपएपवपवएवव	पपन्नपवपवन्नवव	पपठुपवपवठ्ठवव	पपह्नपवपवह्नवव
पपपपवपवपवव	पपऐपवपवऐवव	पपप्रपवपवप्रवव	पपड्डपवपवड्डवव	पपह्मपवपवह्मवव
पपफपवपवफवव	पपऍपवपवऍवव	पपफ्रपवपवफ्रवव	पपडुपवपवडुवव	पपह्यपवपवह्यवव
पपबपवपवबवव	पपऎपवपवऎवव	पपब्रपवपवब्रवव	पपढ़ुपवपवढ़ुवव	पपह्नपवपवह्नवव
पपभपवपवभवव	पपआपवपवआवव	पपभ्रपवपवभ्रवव	पपत्तपवपवत्तवव	
पपमपवपवमवव	पपओपवपवओवव	पपम्रपवपवम्रवव	पपत्खपवपवत्खवव	पपह्नपवपवह्नवव
पपयपवपवयवव	पपऔपवपवऔवव	पपग्रपवपवग्रवव	पपत्थपवपवत्थवव	LIM to consider the second second
पपरपवपवरवव	पपऋपवपवऋवव	पपरूपवपवरूवव	पपत्नपवपवत्नवव	U/Uu variant spacing
पपलपवपवलवव	पपऋपवपवऋवव	पपत्रपवपवत्रवव	पपत्सपवपवत्सवव	पपहुपवपवहुवव
पपळपवपवळवव	पपलृपवपवलृवव	पपत्रपवपवत्रवव	पपत्यपवपवत्यवव	पपहूपवपवहूवव
पपवपवपववव	पपॡपवपवॡवव	पपश्रपवपवश्रवव	पपद्धपवपवद्भवव	पपहृपवपवहृवव
पपशपवपवशवव		पपष्रपवपवष्रवव	पपद्गपवपवद्गवव	पपहृपवपवहृवव
पपषपवपवषवव		पपस्रपवपवस्रवव	पपद्वपवपवद्ववव	पपहुपवपवहुवव
पपसपवपवसवव		पपह्रपवपवह्रवव	पपद्भपवपवद्भवव	पपहूपवपवहूवव
			The second of th	88

पपरुपवपवरुवव पपरुपवपवदुवव पपदुपवपवदुवव पपदूपवपवदुवव पपदूपवपवदुवव पपद्पवपवदुवव पपप्यंपपरंपपकंपप पपपंपपरंपपकंपप पपपंपपरापपकापप पपपापपरापपकापप	पपपौपपरौपपकौपप पपपौपपरौपपकौपप पपपौपपरौपपकौपप पपपुपपरूपपकुपप पपपूपपरूपपकृपप पपपूपपरूपपकृपप पपपूपपरूपपकृपप पपपूपपरूपपकृपप पपपूपपरूपपकृपप पपपूपपरूपपकृपप पपप्पपरूपपकृपप पपप्पपर्पपर्कपप पपप्पपर्पपर्कपप पपप्पर्पपर्कपप पपप्पर्पपर्कपप पपप्पर्पपर्कपप पपप्पर्पपर्कपप पपप्पर्पपर्कपप पपप्पर्पपर्कपप पपप्पर्पपर्कपप पपर्पपर्पपर्कपप पपर्पपर्पपर्कपप पपर्पपर्पपर्कपप पपर्पपर्पपर्कपप पपर्पपर्पपर्कपप पपर्पपर्पपर्कपप पपर्पपर्पपर्कपप पपर्पपर्पपर्कपप पपर्पपर्वपर्वचवववववववववववववववववववववववववव	Numeral spacing ००००१०११११ ००२०१०१२११ ००३०१०१३११ ००४०१०१४११ ००५०१०१६११ ००६०१०१६११ ००५०१०१८११ ००५०१०१८११ ८ ८ ८ ८ ८ ८ ८ ८ ८ ००००१०१८११ ८ ८ ८ ८ ८ ८ ८ ८ ८ ८ ८ ८ ८ ८ ८ ८ ८ ८ ८ ८ ८ ८ ८ ८ ८ ८ ८ ८ ८ ८ ८ ८	पपफ, पवफ. पपब, पवब. पपभ, पवभ. पपम, पवम. पपम, पवय. पपर, पवर. पपल, पवल. पपळ, पवळ. पपव, पवश. पपश, पवश. पपस, पवस. पपस, पवस. पपस, पवह. पपक, पवज़. पपख़, पवज़. पपज़, पवज़. पपज़, पवज़. पपज़, पवज़. पपज़, पवज़. पपज़, पवज़. पपज़, पवज़. पपअ, पवस. पपमा, पवमा. पपज़, पवज़. पपज़, पवज़. पपमा, पवमा. पपजा, पवज़. पपअ, पवअ. पपअ, पवअ. पपअ, पवअ. पपअ, पवज़.	पपआ, पवआ. पपओ, पवऔ. पपओ, पवऔ. पपऋ, पवऋ. पपऋ, पवæ. पपळ, पवळ. पपळ, पवळ. पपळ, पवळ. पपढ़, पवढ़. पपढ़, पवढ़. पपढ़, पवढ़. पपढ़, पवढ़. पपढ़, पवढ़. पपढ़, पवळ. पपळ, पवळ. पपढ़, पवढ़.	पपद्ग, पवद्दः पपश्म, पवश्मः पपश्म, पवश्मः पपश्च, पवलः पपल्लं, पवल्लः पपल्लं, पवल्लः पपल्लं, पवल्लः पपल्लं, पवल्लः पपल्लं, पवल्लः पपल्लं, पवल्लः पपल्लं, पवल्लः पपल्लं, पवल्लः पपल्लं, पवल्लः पपल्लं, पवर्वः पपर्वं, पवद्रः पपद्गं, पवद्रः पपत्नं, पवनः पपनः पवणः पपणः पवणः पपणः पवणः पपणः पवणः पपणः पवनः पपणः पवनः पपणः पवनः पपणः पवनः पपणः पवनः पपणः पवनः पपणः पवनः पपनः पवनः पपनः पवनः पपनः पवनः पपनः पवनः पपनः पवनः पपनः पवनः पपनः पवनः
पपपॉंपपरॉंपपकॉंपप		पपथ, पवथ.	पपऊ, पवऊ.	पपद्ध, पवद्ध.	पपजं; पवजः

पपड; पवड:	पपॲ; पवॲ:	पपड्ढ; पवड्ढ:	पपघ। पवघ:	पपड़ पवड़:	पपह्न। पवह्न:	पपरू। पवरू:
पपढः; पवढः	पपइ; पवइ:	पपड्ड; पवड्ड:	पपङ। पवङ:	पपढ़। पवढ़:	पपळ्र। पवळ्र:	पपदु। पवदुः
पपणः; पवणः	पपई; पवई:	पपट्ट; पवट्ट:	पपच। पवच:	पपफ़। पवफ़:		पपदू। पवदू:
पपतः; पवतः	पपउ; पवउ:	पपद्धः, पवद्धः	पपछ। पवछ:	पपय्। पवयः	पपक्त। पवक्तः	पपदृ। पवदृ:
पपथ; पवथ:	पपऊ; पवऊ:	पपद्गः; पवद्गः	पपज। पवज:	पपक्ष। पवक्ष:	पपरु। पवरु:	
पपदः पवदः	पपए; पवए:	पपद्धः; पवद्धः	पपझ। पवझ:	पपज्ञ। पवज्ञ:	पपरू। पवरू:	-
पपधः; पवधः	पपऐ; पवऐ:	पपद्भः, पवद्भः	पपञ। पवञ:		पपट्ट। पवट्ट:	पपक! पवक?
पपनः; पवनः	पपऍ; पवऍ:	पपद्वः; पवद्वः	पपट। पवट:	पपअ। पवअ:	पपट्ठ। पवट्ठ:	पपख! पवख?
पपप; पवप:	पपऎ; पवऎ:	पपद्धः पवद्धः	पपठ। पवठ:	पपञ्जे। पवञै:	पपट्ठ। पवट्ट:	पपग! पवग?
पपफ; पवफ:	पपआ; पवआ:	पपद्दः पवद्दः	पपड। पवड:	पपॲ। पवॲ:	पपड्ढ पवड्ढ:	पपघ! पवघ?
पपब; पवब:	पपओ; पवओ:	पपष्टः, पवष्टः	पपढ। पवढ:	पपइ। पवइ:	पपड्ड पवड्ड:	पपङ! पवङ?
पपभ; पवभ:	पपऔ; पवऔ:	पपभः; पवभः	पपण। पवण:	पपई। पवई:	पपढू। पवढू:	पपच! पवच?
पपमः; पवमः	पपऋ; पवऋ:	पपष्ठ; पवष्ठ:	पपत। पवतः	पपउ। पवउ:	पपद्ध। पवद्धः	पपछ। पवछ?
पपय; पवय:	पपऋ; पवऋ:	पपल्जः; पवल्जः	पपथ। पवथ:	पपऊ। पवऊ:	पपद्ग। पवद्गः	पपज! पवज?
पपर; पवर:	पपलः; पवलः	पपह्नः; पवह्नः:	पपद। पवद:	पपए। पवए:	पपद्व। पवद्वः	पपझ! पवझ?
पपलः; पवलः	पपॡ; पवॡ:	पपह्न; पवह्न:	पपध। पवध:	पपऐ। पवऐ:	पपद्भ। पवद्भ:	पपञ! पवञ?
पपळ; पवळ:		पपह्न; पवह्न:	पपन। पवन:	पपऍ। पवऍ:	पपद्व। पवद्वः	पपट! पवट?
पपवः; पववः		पपह्नः; पवह्नः	पपप। पवप:	पपऎ। पवऎ:	पपद्ध। पवद्धः	पपठ! पवठ?
पपशः; पवशः	पपङ्ग; पवङ्ग:		पपफ। पवफ:	पपआ। पवआ:	पपद्। पवद्दः	पपड! पवड?
पपषः; पवषः	पपछः; पवछः:	पपहु; पवहु:	पपब। पवब:	पपओ। पवओ:	पपष्ट। पवष्टः	पपढ! पवढ?
पपसः; पवसः	पपट्र; पवट्र:	पपहूं; पवहूं:	पपभ। पवभ:	पपऔ। पवऔ:	पपन्भ। पवन्भः	पपण! पवण?
पपह; पवह:	पपठ्र; पवठ्र:	पपहुँ; पवहुँ:	पपम। पवम:	पपऋ। पवऋ:	पपष्ठ। पवष्ठः	पपत! पवत?
पपक़; पवक़:	पपड्र; पवड्र:	पपह्र; पवहृ:	पपय। पवय:	पपऋ। पवऋ:	पपल्ज। पवल्जः	पपथ! पवथ?
पपख़; पवख़:	पपद्र; पवद्र:	पपहु; पवहु:	पपर। पवर:	पपल्। पवलः	पपह्न। पवह्न:	पपद! पवद?
पपगः; पवगः:	पपद्र; पवद्र:	पपहूँ; पवहूँ:	पपल। पवल:	पपॡ। पवॡ:	पपह्न। पवह्न:	पपध! पवध?
पपज़; पवज़:	पपरू; पवरू:	पपरु; पवरु:	पपळ। पवळ:		पपह्न। पवह्न:	पपन! पवन?
पपड़; पवड़:	पपह्र; पवह्र:	पपरू; पवरू:	पपव। पवव:		पपह्न। पवह्न:	पपप! पवप?
पपढ़; पवढ़:	पपळ्र; पवळ्र:	पपदु; पवदु:	पपशा। पवशः	पपङ्ग। पवङ्गः		पपफ! पवफ?
पपफ़; पवफ़:		पपद्रं; पवद्रं:	पपष। पवष:	पपछ्र। पवछ्र:	पपहु। पवहुः	पपब! पवब?
पपयः; पवयः:	पपक्तः, पवक्तः	पपदृः पवदृः	पपस। पवस:	पपट्र। पवट्र:	पपहूँ। पवहूँ:	पपभ! पवभ?
पपक्ष; पवक्ष:	पपरुः; पवरुः:		पपह। पवह:	पपठ्र। पवठ्र:	पपह्न। पवहः	पपम्। पवम्?
पपज्ञ; पवज्ञ:	पपरू; पवरू:	-	पपक़। पवक़:	पपड्र। पवड्र:	पपहॄ। पवहॄ:	पपय! पवय?
	पपट्टः, पवट्टः	पपक। पवकः	पपख्र। पवख़:	पपद्र। पवद्र:	पपह्र। पवह्रः	पपर! पवर?
पपअ; पवअ:	पपट्ठः, पवट्ठः	पपख। पवख:	पपग़। पवग़:	पपद्र। पवद्र:	पपहूँ। पवहूं:	पपल! पवल?
पपऄ; पवऄ:	पपट्ठः, पवट्ठः	पपग। पवग:	पपज्ञ। पवजः	पपर्र। पवर्:	पपरु। पवरु:	पपळ! पवळ?

पपव! पवव?	पपङ्र! पवङ्ग?		पपफ-फपव	पपआ-आपव	पपद्द-द्दपव	"डपवपड"
पपशा पवशः?	पपछ्र! पवछ्र?	पपहु! पवहु?	पपब-बपव	पपओ-ओपव	पपष्ट-ष्टपव	"ढपवपढ"
पपष्! पवष?	पपट्र! पवट्र?	पपहूँ! पवहूँ?	पपभ-भपव	पपऔ-औपव	पपन्भ-भपव	"णपवपण"
पपस! पवस?	पपठ्र! पवठ्र?	पपहृं! पवहृं?	पपम-मपव	पपऋ-ऋपव	पपष्ठ-ष्ठपव	"तपवपत"
पपह! पवह?	पपड्र! पवड्र?	पपहॄ! पवहॄ?	पपय-यपव	पपऋ-ऋपव	पपल्ज-ल्जपव	"थपवपथ"
पपक़! पवक़?	पपद्र! पवद्र?	पपह्नु! पवह्नु?	पपर-रपव	पपल-लपव	पपह्न-ह्नपव	"दपवपद"
पपख़! पवख़?	पपद्र! पवद्र?	पपहूँ! पवहूँ?	पपल-लपव	पपॡ-ॡपव	पपह्न-ह्नपव	"धपवपध"
पपग़! पवग़?	पपरू! पवरू?	पपरु! पवरु?	पपळ-ळपव		पपह्न-ह्नपव	"नपवपन"
पपज़! पवज़?	पपह्र! पवह्र?	पपरू! पवरू?	पपव-वपव	गार सार	पपह्न-ह्नपव	"पपवपप"
पपड़! पवड़?	पपळ्! पवळ्?	पपदु! पवदु?	पपश-शपव	पपङ्-ङ्गपव		"फपवपफ"
पपढ़! पवढ़?		पपदू! पवदू?	पपष-षपव	पपछ्र-छ्रपव	पपहु–हुपव	"बपवपब"
पपफ़! पवफ़?	पपक्त! पवक्त?	पपदृ! पवदृ?	पपस-सपव	पपट्र-ट्रपव	पपहू–हूपव	"भपवपभ"
पपय़! पवय़?	पपरु! पवरु?		पपह-हपव	पपठ्र-ठ्रपव	पपह्र–हृपव	"मपवपम"
पपक्ष! पवक्ष?	पपर्रः। पवरू?	-	पपक़-क़पव	पपडू-डूपव	पपह्-हृपव	"यपवपय"
पपज्ञ! पवज्ञ?	पपट्ट! पवट्ट?	पपक-कपव	पपख़-ख़पव	पपद्र-द्रपव	पपहु–हुपव	"रपवपर"
	पपट्ठ! पवट्ठ?	पपख-खपव	पपग्र-ग्रपव	पपद्र-द्रपव	पपहू–हूपव	"लपवपल"
पपअ! पवअ?	पपट्टा पवट्ट?	पपग-गपव	पपज़-ज़पव	पपर्-रूपव	पपरु-रुपव	"ळपवपळ"
पपऄ! पवऄ?	पपड्ढ! पवड्ढ?	पपघ-घपव	पपड़-ड़पव	पपह्र-ह्रपव	पपरू-रूपव	"वपवपव"
पपॲ! पवॲ?	पपड्ड! पवड्ड?	पपङ-ङपव	पपढ़-ढ़पव	पपळ्-ळ्रपव	पपदु-दुपव	"शपवपश"
पपइ! पवइ?	पपढॄ! पवढॄ?	पपच-चपव	पपफ़-फ़पव	गास स्वात	पपदू–दूपव	"षपवपष"
पपई! पवई?	पपद्ध! पवद्ध?	पपछ-छपव	पपय़-य़पव	पपक्त–क्तपव पप्रु–रूपव	पपदृ–दृपव	"सपवपस"
पपउ! पवउ?	पपद्ग! पवद्ग?	पपज-जपव	पपक्ष-क्षपव	पपरू-रूपव		"हपवपह"
पपऊ! पवऊ?	पपद्ध! पवद्ध?	पपझ-झपव	पपज्ञ-ज्ञपव		-	"क्रपवपक़"
पपए! पवए?	पपद्भ! पवद्भ?	पपञ-ञपव		पपट्ट-ट्टपव पपट्ट-ट्टपव	"कपवपक"	"ख़पवपख़"
पपऐ! पवऐ?	पपद्ध! पवद्ध?	पपट-टपव	पपअ-अपव	पपठु-ठुपव	"खपवपख"	"गुपवपगः"
पपऍ! पवऍ?	पपद्ध! पवद्ध?	पपठ-ठपव	पपॐ-ॐपव	पपड्ड-ड्डपव	"गपवपग"	"ज़पवपज़"
पपऎ! पवऎ?	पपद्! पवद्द?	पपड-डपव	पपॲ-ॲपव	पपड्ड-डुपव	"घपवपघ"	"ड़पवपड़"
पपआ! पवआ?	पपष्ट! पवष्ट?	पपढ-ढपव	पपइ-इपव	पपढु-ढुपव	"ङपवपङ"	"ढ़पवपढ़"
पपओ! पवओ?	पपन्भ! पवन्भ?	पपण-णपव	पपई-ईपव	पपद्ध-द्धपव	"चपवपच"	"फ़पवपफ़"
पपऔ! पवऔ?	पपष्ठ! पवष्ठ?	पपत-तपव	पपउ-उपव	पपद्ग-द्गपव	"छपवपछ"	"यपवपय"
पपऋ! पवऋ?	पपल्ज! पवल्ज?	पपथ-थपव	पपऊ-ऊपव	पपद्ध-द्वपव	"जपवपज"	"क्षपवपक्ष"
पपऋ! पवऋ?	पपह्न! पवह्न?	पपद-दपव	पपए-एपव	पपद्भ-द्भपव	"झपवपझ"	"ज्ञपवपज्ञ"
पपलृ! पवलृ?	पपह्न! पवह्न?	पपध-धपव	पपऐ-ऐपव	पपद्व-द्वपव	"ञपवपञ"	
पपॡ! पवॡ?	पपह्न! पवह्न?	पपन-नपव	पपऍ-ऍवव	पपद्ध-द्धपव	"टपवपट"	"अपवपअ"
	पपह्न! पवह्न?	पपप-पपव	पपऎ-ऎपव	יויסג יסגויו	"ठपवपठ"	"ऄपवपऄ"

	U		li Verral eige - baga	
"ॲपवपॲ"	"डुपवपडु"	Num-punct spacing	li Vowel sign - base	पपहिपपहिंपपर्हिपप
"इपवपइ" 	"ढुपवपढु"	पवप ₹१०१ वपव	पपिकपपिकंपपिकंपप	पपक्षिपपक्षिंपपर्क्षिपप
"ईपवपई" 	"द्धपवपद्ध"	पवप ₹२०१ वपव	पपखिपपखिंपपर्खिपप	पपज्ञिपपज्ञिंपपर्ज्ञिपप
"3पवप3" "	"द्गपवपद्ग"	पवप ₹३०१ वपव	पपगिपपगिंपपर्गिपप	
"ऊपवपऊ"	"द्वपवपद्व"	पवप ₹४०१ वपव	पपघिपपघिंपपर्घिपप	
"एपवपए"	"द्भपवपद्भ"	पवप ₹५०१ वपव	पपङिपपङिंपपर्ङिपप	
"ऐपवपऐ" 	"द्वपवपद्व"	पवप ₹६०१ वपव	पपचिपपचिंपपर्चिपप	
"ऍपवपऍवव	"द्धपवपद्ध"	पवप ₹७०१ वपव	पपछिपपछिंपपर्छिपप	
"ऎपवपऎ"	"द्दपवपद्द"	पवप ₹८०१ वपव	पपजिपपजिंपपर्जिपप	
"आपवपआ"	"ष्टपवपष्ट"	पवप ₹९०१ वपव	पपझिपपझिंपपर्झिपप	
"ओपवपओ" "- *******	"भपवपभ"		पपञिपपञिंपपर्ञिपप	
"औपवपऔ"	"ष्ठपवपष्ठ"	०००,०१०,०११	पपटिपपटिंपपर्टिपप	
" '''''''	"ल्जपवपल्ज"	008,080,888	पपठिपपठिंपपर्ठिपप	
"ऋपवपऋ" ""	"ह्नपवपह्न"	007,080,788	पपडिपपडिंपपर्डिपप	
"ल्पवपल्"	"ह्नपवपह्न" "	003,080,388	पपढिपपढिंपपर्ढिपप	
"ॡपवपॡ"	"ह्नपवपह्न"	008,080,888	पपणिपपणिंपपर्णिपप	
U -11-11-1 U	"ह्वपवपह्न"	००५,०१०,५११	पपतिपपतिंपपर्तिपप	
"ङ्गपवपङ्ग"	II II	006,080,688	पपथिपपथिंपपर्थिपप	
"छ्रपवपछ्र"	"हुपवपहु"	006,080,688	पपदिपपदिंपपर्दिपप	
"ट्रपवपट्र"	"हूपवपहू"	00८,0१०,८११	पपधिपपधिंपपर्धिपप	
"ठ्रपवपठ्र"	"हपवपह"	009,080,988	पपनिपपनिंपपर्निपप	
"ड्रपवपड्र"	"हृपवपहृ"		पपपिपपपिंपपर्पिपप	
"द्रपवपद्र"	"हुपवपहु"	000.080.088	पपफिपपफिंपपर्फिपप	
"द्रपवपद्र"	"हूपवपहू"	008.080.888	पपबिपपबिंपपर्बिपप	
"रूपवपरू"	"रुपवपरु"	007.080.788	पपभिपपभिंपपर्भिपप	
"ह्रपवपह्र"	"रूपवपरू" "रमस्यार"	003.080.388	पपमिपपमिंपपर्मिपप	
"ळ्पवपळ्"	"दुपवपदु"	00%.080.888	पपयिपपयिंपपर्यिपप	
 	"दूपवपदू"	००५.०१०.५११	पपरिपपरिंपपरिंपप	
"क्तपवपक्त"	"दृपवपदृ"	००६.०१०.६११	पपलिपपलिंपपर्लिपप	
"ਨੁਧਰਪਨ" "ਨੁਧਰਪਨ"		980.080.000	पपळिपपळिंपपळिंपप	
"रूपवपऱ्रू" "ट्याट्याट्र"		००८.०१०.८११	पपविपपविंपपर्विपप	
"ट्रपवपट्ट" "ट्राचाट"		009.080.988	पपशिपपशिंपपर्शिपप	
"द्रपवपद्र" "ठाप्याट"			पपषिपपषिंपपर्षिपप	
"तुपवपत्र" "ट्याटाएट"			पपसिपपसिंपपर्सिपप	
"हुपवपहु"				

Ii Vowel sign clusters	पपक्त्विपप	पपग्भिपप	पपङ्गिपप	पपर्ज्किपप	पपर्ट्रीपप	पपर्लिपप	पपर्धिपप
	पपिक्यिपप	पपर्ग्मिपप	पपङ्गीपप	पपर्ज्जिपप	पपर्द्विपप	पपर्त्यिपप	पपर्द्रिपप
पपर्क्किपप	पपक्स्टिपप	पपर्ग्यिपप	पपङ्घिपप	पपर्ज्झिपप	पपट्वींपप	पपर्त्रिपप	पपर्द्विपप
पपिक्खिपप	पपक्स्डिपप	पपर्ग्रिपप	पपङ्घींपप	पपर्ज्ञिपप	पपर्ह्रिपप	पपर्ल्लिपप	पपर्द्ध्यिपप
पपर्कापप	पपक्स्तिपप	पपर्ग्लिपप	पपङ्चिंपप	पपर्ज्तिपप	पपर्हीपप	पपर्त्विपप	पपर्द्र्व्रपप
पपर्क्चिपप	पपक्सिपप	पपर्ग्विपप	पपर्ङ्क्षपप	पपर्ज्दिपप	पपर्व्रिपप	पपर्ल्सिपप	पपर्द्यिपप
पपिक्छिपप	पपिक्स्प्रिपप	पपर्ग्सिपप	पपङ्क्रीपप	पपर्ज्निपप	पपर्वठ्यपप	पपत्क्यिपप	पपर्ध्किपप
पपिक्जिपप	पपर्क्प्रिपप	पपग्ध्यिपप	पपर्ङ्क्रिपप	पपर्ज्बिपप	पपर्ड्डिपप	पपर्त्क्रिपप	पपर्ध्धिपप
पपर्क्झिपप पपर्क्टिपप	पपिकस्प्लीपप	पपग्ध्विपप	पपर्ड्मिपप	पपर्ज्मिपप	पपर्ड्डिपप	पपर्त्सिपप	पपर्ध्निपप
	पपर्ख्विपप	पपग्न्यिपप	पपर्ङ्यिपप	पपर्ज्यिपप	पपर्ड्रिपप	पपित्र्जिपप	पपर्ध्यिपप
पपर्क्विपप	पपर्ख्टिपप	पपग्भिर्यपप	पपर्ङ्रिपप	पपर्ज्ञिपप	पपर्ड्डियपप	पपर्ल्खिपप	पपर्धिपप
पपर्क्डिपप	पपर्ख्विपप	पपर्ग्रिपप	पपर्च्किपप	पपर्ज्लिपप	पपर्ढ्विपप	पपर्ल्खिपप	पपर्ध्लिपप
पपर्क्टिपप पपर्क्णिपप	पपर्ख्णिपप	पपग्म्यिपप	पपर्च्खिपप	पपर्ज्विपप	पपर्ह्वीपप	पपित्र्चिपप	पपर्ध्विपप
पपक्तिपप पपर्क्तिपप	पपर्ख्तिपप	पपग्ल्यिपप	पपर्च्चिपप	पपर्झ्किपप	पपर्द्विपप	पपर्त्प्रिपप	पपर्ध्सिपप
	पपर्ख्दिपप	पपर्घ्यिपप	पपर्च्टिपप	पपर्झ्गिपप	पपर्ढ्यिपप	पपित्प्लिपप	पपर्न्किपप
पपर्क्थिपप	पपर्ख्निपप	पपर्घ्जिपप	पपर्च्छिपप	पपर्झ्यिपप	पपर्व्ह्यिपप	पपित्र्येपप	पपर्न्खिपप
पपर्क्टिपप	पपर्खिपप	पपर्घ्टिपप	पपर्च्डिपप	पपर्झिपप	पपर्ण्टिपप	पपित्स्र्नेपप	पपर्न्चिपप
पपर्क्निपप पपर्क्यिपप	पपर्ख्मिपप	पपर्घ्विपप	पपर्च्छिपप	पपर्झ्तिपप	पपण्टीपप	पपित्स्यिपप	पपर्न्छिपप
पपर्क्षिपप पपर्क्षिपप	पपर्ख्यिपप	पपर्घ्डिपप	पपर्च्णिपप	पपर्झ्निपप	पपर्ण्ठिपप	पपित्स्विपप	पपर्न्जिपप
पपक्किपप पपक्किपप	पपर्ख्रिपप	पपिर्घ्णिपप	पपर्च्तिपप	पपर्झ्यिपप	पपर्ण्डिपप	पपित्स्न्यपप	पपर्न्झिपप
पपर्क्षिपप पपर्क्सिपप	पपर्ख्लिपप	पपर्घ्तिपप	पपर्च्थिपप	पपर्झिपप	पपर्ण्हिपप	पपर्थ्किपप	पपर्न्टिपप
पपर्क्मिपप	पपर्ख्विपप	पपर्घ्दिपप	पपर्च्दिपप	पपर्झ्लिपप	पपर्णिपप	पपर्थ्यिपप	पपर्न्ठिपप
पपर्क्यिपप पपर्क्यिपप	पपर्ख्शिपप	पपर्घ्निपप	पपर्च्धिपप	पपर्झ्विपप	पपर्ण्तिपप	पपर्थ्मिपप	पपर्न्डिपप
पपर्क्रिपप	पपर्ख्यिपप	पपर्घ्विपप	पपर्च्निपप	पपर्झ्मिपप	पपर्ण्यिपप	पपर्थ्यिपप	पपर्न्हिपप
पपक्लिपप पपक्लिपप	पपिर्ख्यिपप	पपर्घ्मिपप	पपर्च्यिपप	पपर्ञ्चिपप	पपर्णिपप	पपर्श्रिपप	पपर्न्तिपप
पपर्क्विपप पपर्क्विपप	पपर्ख्यिपप	पपर्घ्यिपप	पपर्च्चिपप	पपर्ञ्जिपप	पपर्ण्विपप	पपर्थ्लिपप	पपर्न्थिपप
पपक्शिपप	पपर्ग्किपप	पपर्चिपप	पपर्च्लिपप	पपञ्शिपप	पपर्त्किपप	पपर्थ्विपप	पपर्न्दिपप
पपर्क्षिपप	पपर्गिपप	पपर्घ्लिपप	पपर्चिपप	पपञ्चिंपप	पपर्त्खिपप	पपर्थ्सिपप	पपर्स्थिपप
पपर्क्सिपप	पपर्ग्जिपप	पपर्घ्विपप	पपर्च्सिपप	पपञ्ज्यिपप	पपर्त्तिपप	पपर्दूिपप	पपर्न्निपप
पपर्क्हिपप	पपर्ग्णिपप	पपर्घ्सिपप	पपर्चिपप	पपर्ट्टिपप	पपर्श्विपप	पपर्द्धिपप	पपर्न्पिपप
पपक्ळिपप	पपर्ग्तिपप	पपिर्ट्यिपप	पपर्च्मिपप	पपर्ट्टीपप	पपर्लिपप	पपर्ह्पिप	पपर्म्भिपप
पपक्क्यिपप	पपर्ग्दिपप	पपर्ङ्किपप	पपर्च्चिपप	पपर्ह्विपप	पपर्त्पिपप	पपर्द्धिपप	पपर्न्बिपप
पपर्क्त्रिपप	पपर्ग्धिपप	पपङ्कीपप	पपर्छ्यिपप	पपर्हीपप	पपर्त्फिपप	पपर्द्धिपप	पपर्मिपप
पपक्त्यिपप पपक्त्यिपप	पपर्ग्निपप	पपङ्खिंपप	पपर्छ्रिपप	पपर्ट्यिपप	पपर्त्बिपप	पपर्द्भिपप	पपर्मिपप
1114(414	पपर्ग्बिपप	पपङ्खींपप	पपछिर्वपप	पपर्ट्रिपप	पपर्सिपप	पपर्झिपप	पपर्न्यिपप

पपर्न्रिपप	पपर्प्निपप	पपर्मिपप	पपर्ल्दिपप	पपर्स्टिपप	पपळ्यिपप
पपन्लिपप	पपर्प्पिपप	पपर्म्मिपप	पपर्ल्पिपप	पपस्ठिपप	पपळ्पिपप
पपर्न्विपप	पपर्प्भिपप	पपर्म्यिपप	पपर्ल्मिपप	पपर्स्डिपप	पपळ्विपप
पपर्न्सिपप	पपर्प्मिपप	पपर्म्रिपप	पपर्ल्बिपप	पपर्स्टिपप	पपर्स्यिपप
पपर्न्हिपप	पपर्प्यिपप	पपर्म्लिपप	पपर्ल्भिपप	पपर्स्तिपप	पपर्क्ष्मिपप
पपन्भिर्यपप	पपर्प्रिपप	पपर्म्विपप	पपर्ल्मिपप	पपर्स्थिपप	पपर्स्विपप
पपन्भिर्वेपप	पपर्प्लिपप	पपम्शिपप	पपर्ल्यिपप	पपर्स्दिपप	
पपन्म्यिपप	पपर्प्विपप	पपर्म्सिपप	पपर्ल्लिपप	पपर्स्निपप	
पपन्स्टिपप	पपर्ष्मिपप	पपर्म्हिपप	पपर्ल्विपप	पपर्स्पिपप	
पपन्स्यिपप	पपर्प्सिपप	पपम्म्यिपप	पपर्ल्सिपप	पपर्स्फिपप	
पपन्ह्यिपप	पपर्प्ळिपप	पपर्म्प्रिपप	पपर्ल्हिपप	पपर्स्बिपप	
पपन्ज्यिपप	पपर्प्यिपप	पपम्ब्यिपप	पपिल्र्यिपप	पपर्स्मिपप	
पपन्क्सिपप	पपर्फ्किपप	पपर्म्ब्रिपप	पपर्ल्ह्यिपप	पपर्स्यिपप	
पपन्त्र्यपप	पपर्प्जिपप	पपम्भिर्यपप	पपल्क्यिपप	पपर्स्रिपप	
पपन्त्र्सपप	पपर्फ्टिपप	पपर्म्भिपप	पपल्थ्यिपप	पपर्स्लिपप	
पपन्थ्यिपप	पपर्फ्तिपप	पपम्भिर्वेपप	पपर्ल्ट्रिपप	पपर्स्विपप	
पपन्थ्विपप	पपर्प्दिपप	पपर्य्यिपप	पपर्श्किपप	पपर्स्सिपप	
पपर्न्द्रिपप	पपर्फ्निपप	पपर्ग्रिपप	पपर्श्खिपप	पपस्म्यिपप	
पपर्न्द्घिपप	पपर्फ्पिपप	पपर्निपप	पपश्चिंपप	पपर्स्क्रिपप	
पपन्ध्यिपप	पपर्मिपप	पपर्व्यिपप	पपश्छिपप	पपस्त्र्यपप	
पपर्स्थिपप	पपर्फ्यिपप	पपर्व्रिपप	पपर्श्टिपप	पपस्थिपप	
पपर्न्प्रिपप	पपर्फ्रिपप	पपर्व्लिपप	पपर्श्तिपप	पपस्म्यिपप	
पपन्स्म्यपप	पपर्फ्लिपप	पपर्व्सिपप	पपर्श्निपप	पपस्त्विपप	
पपर्प्किपप	पपफ्शिपप	पपर्व्हिपप	पपर्श्बिपप	पपर्स्प्रिपप	
पपर्स्झिपप	पपर्भ्निपप	पपर्ल्किपप	पपर्श्मिपप	पपस्र्चिपप	
पपर्प्टिपप	पपर्भ्यिपप	पपर्ल्खिपप	पपर्श्यिपप	पपर्ह्लिपप	
पपर्प्विपप	पपर्भिपप	पपर्लिपप	पपर्श्रिपप	पपर्ह्तिपप	
पपर्प्टीपप	पपर्भ्लिपप	पपर्ल्चिपप	पपर्श्लिपप	पपर्ह्यिपप	
पपर्ष्डिपप	पपर्भ्विपप	पपर्ल्जिपप	पपर्श्विपप	पपर्ह्मिपप	
पपर्प्हिपप	पपर्भ्यिपप	पपर्ल्टिपप	पपश्शिपप	पपर्हम्यिपप	
पपर्णिपप	पपर्म्तिपप	पपर्लिपप	पपर्श्चिपप	पपर्ह्निपप	
पपर्प्तिपप	पपर्म्दिपप	पपर्ल्डिपप	पपर्स्किपप	पपर्हिपप	
पपर्धिपप	पपर्म्निपप	पपर्ल्हिपप	पपस्खिपप	पपर्ह्मिपप	
पपर्प्दिपप	पपर्म्पिपप	पपर्लिपप	पपर्स्छिपप	पपर्ह्निपप	
पपर्ष्यिपप	पपर्म्बिपप	पपर्ल्थिपप	पपस्जिपप	पपर्ह्विपप	

Half-to-base kerns

पपक्कपपक्खपपक्गपपक्घपपक्डपपक्चप पक्छपपक्जपपक्झपपक्ञपपक्टपपक्ठपपक्डप पक्टपपक्णपपक्तपपक्थपपक्दपपक्थपपक्नप पक्नपपक्पपपक्कपपक्षपपक्मपपक्यप पक्रपपक्रपपक्लपपक्ळपपक्ळपपक्यप पक्शपपक्षपपक्सपपक्हपपक्कपपक्खपपक्गप पक्शपपक्षपपक्टपपक्कपपक्खपपक्गप पक्जपपक्डपपक्टपपक्कपपक्यपप

पपःकपपःख्वपपःखापपःख्वपपःख्वप पःख्वपपःखापपःख्वपपःख्वपपःख्वप पःख्वपपःखापपःख्वपपःख्वपपःख्वप पःखापपःखापपःख्वपपःख्वपपःख्वप पःखापपःखापपःख्वपपःख्वपपःखाप पःखापपःखापपःख्वपपःख्वपपःखाप पःखापपःखापपःख्वपपःखाप पःखापपःखापपःखाप

पपग्कपपग्खपपगगपपग्घपपग्ङपपगचप पग्छपपग्जपपग्झपपग्ञपपग्टपपग्ठपपग्डप पग्ढपपग्णपपग्तपपग्थपपग्दपपग्धपपग्नप पग्नपपग्पपपग्फपपग्बपपग्भपपगमपपग्यपपग्रप पग्सपपग्हपपग्कपपग्खपपगगपपग्जपपग्डप पग्सपपग्हपपग्कपपग्खपपगगप्रपपग्जपपग्डप पग्दपपग्फपपग्यपप

पपच्कपपच्खपपञापपघ्यपपछ्यपघ्यप पघ्छपपघ्जपपघ्झपपघ्जपपघ्टपपघ्छप पच्चपपघ्णपपघ्तपपघ्थपपघ्यपपघ्मपपघ्यप पघ्नपपघ्मपपघ्कपपघ्बपपघ्मपपघ्यप पघ्नपपघ्मपपघ्लपपघ्लपपघ्वप पघ्शपपघ्मपपघ्सपपघ्लपपघ्लपपघ्यप पघ्शपपघ्मपपघ्सपपघ्लपपघ्लपपाय पघ्नपपा पपच्कपपच्खपपचापपच्चपपच्छपपच्चप पच्छपपच्जपपच्झपपच्अपपच्टपपच्छप पच्छपपच्जपपच्सपपच्थपपच्यपपच्यप पच्नपपच्यपपच्अपपच्अपपच्यपप्यप पच्चपपच्सपपच्लपपच्छपपच्यपपच्यप पच्थपपच्सपपच्हपपच्कपपच्खपपच्यप पच्छपपच्छपपच्सपपच्यप

पपछकपपछखपपछगपपछघपपछङपपछचप पछछपपछजपपछझपपछञपपछटपपछठप पछडपपछढपपछणपपछतपपछथपपछदप पछधपपछनपपछनपपछपपपछफपपछबप पछभपपछनपपछ्यपपछ्रपपछः,पपछलप पछळपपछळपपछवपपछशपपछभपपछसप पछहपपछक्रपपछखपपछग्रपपछजपपछड़प पछढपपछक्रपपछखपप

पपज्कपपज्खपपजापपज्घपपज्झपपज्चप पज्छपपज्जपपज्झपपज्ञपपज्दपपज्छप पज्दपपज्णपपज्तपपञ्थपपज्दपपज्धपपज्नप पज्नपपज्पपपज्कपपज्खपपज्भपपज्यप पज्रपपज्सपपज्लपपज्छपपज्खपपज्ञापपज्ञप पज्थपपज्सपपज्हपपज्कपपज्खपपज्ञापपज्ञप पज्डपपज्सपपज्कपपज्झपप

पपइक्तपपइखपपइगपपइघपपइङपपइचप पइछपपइजपपइझपपइञपपइटपपइठपपइडप पइढपपइणपपइतपपइथपपइदपपइधपपइनप पइऩपपइमपपइफपपइबपपइभपपइमपपइयप पद्मपपइसपपइलपपइळपपइळपपइवपपइशप पइषपपइसपपइहपपइक़पपइखपपइग्रपपइजप पइडपपइद्धपपइफ़पपइस् पपञ्कपपञ्खपपञ्गपपञ्चपपञ्चप पञ्छपपञ्जपपञ्झपपञ्जपपञ्चप पञ्चपपञ्मपपञ्कपपञ्छपपञ्चपपञ्मप पञ्मपपञ्सपपञ्कपपञ्छपपञ्चपपञ्मप पञ्मपपञ्सपपञ्हपपञ्कपपञ्खपपञ्मप पञ्चपपञ्सपपञ्हपपञ्कपपञ्चपपञ्मप पञ्चपपञ्कपपञ्कपपञ्चपपञ्चप

पपट्कपपट्खपपट्गपपट्घपपट्ङपपट्चप पट्छपपट्जपपट्झपपट्ञपपट्घप पट्ढपपट्णपपट्तपपट्थपपट्दपपट्धपपट्नप पट्नपपट्पपपट्फपपट्बपपट्भपपट्मपपट्यप पट्नपपट्रपपट्लपपट्ळपपट्कपपट्वपपट्शप पट्षपपट्सपपट्हपपट्कपपट्खपपट्गपपट्जप पट्डपपट्कपपट्कपपट्खपपट्गपपट्जप पट्डपपट्कपपट्कपपट्सपप

पपठ्कपपठ्खपपठ्गपपठ्घपपठ्ङपपठ्चप पठ्छपपठ्जपपठ्झपपठ्ञपपठ्टपपठ्ठपप पठ्ढपपठ्णपपठ्तपपठ्थपपठ्दपपठ्धपपठ्नप पठ्तपपठ्पपपठ्फपपठ्बपपठ्भपपठ्मपपठ्यप पठ्रपपठ्ऱपपठ्लपपठ्ळपपठ्खपपठ्मपपठ्शप पठ्षपपठ्सपपठ्हपपठ्कपपठ्खपपठ्गपपठ्जप पठ्षपपठ्सपपठ्हपपठ्कपपठ्खपपठ्गपपठ्जप पठ्डपपठ्ढपपठ्कपपठ्झपप

पपड्कपपड्खपपड्गपपड्घपपड्डपपड्चप पड्छपपड्जपपड्झपपड्ञपपड्टपपड्ठपपड्डुप पड्डपपड्णपपड्तपपड्थपपड्दपपड्धपपड्नप पड्नपपड्पपपड्फपपड्बपपड्भपपड्मपपड्यप पद्मपड्रपपड्लपपड्ळपपड्ळपपड्चपपड्शप पड्षपपड्सपपड्हपपड्ळपपड्खपपड्गपपड्जप पड्डपपड्सपपड्हपपड्झपप

पपढ्कपपढ्खपपढ्गपपढ्घपपढ्ङपपढ्चप पढ्छपपढ्जपपढ्झपपढ्ञपपढ्टपपढ्ठपपढ्डप पढ्डपपढ्णपपढ्तपपढ्थपपढ्दपपढ्धपपढ्नप पढ्नपपढ्पपपढ्फपपढ्बपपढ्भपपढ्मपपढ्यप पद्रपपढ्रपपढ्लपपढ्ळपपढ्ञपपढ्शप पढ्षपपढ्सपपढ्हपपढ्जप पढ्षपपढ्सपपढ्हपपढ्जप पढ्डपपढ्सपपढ्सपप

पपण्कपपण्खपपण्गपपण्घपपण्डपपण्चप पण्डपपण्जपपण्झपपण्ञपपण्डप पण्डपपण्जपपण्झपपण्ञपपण्डप पण्नपपण्पपण्लपपण्ञपपण्ञपपण्यप पण्णपण्यपपण्लपपण्ञपपण्ञप पण्डपपण्डपपण्जपपण्ञपपण्ञप पण्डपपण्डपपण्जपपण्ञप

पपत्कपपत्खपपतापपत्खपपतङपपत्वपपत्छप पत्जपपत्झपपत्जपपत्टपपत्छपपत्छपप पत्तपपत्थपपत्दपपत्थपपत्नपपत्नपपत्पपपत्भप पत्बपपत्भपपत्मपपत्यपपत्रपपत्रपपत्लपपत्ळप पत्ळपपत्वपपत्शपपत्सपपत्सपपत्हपपत्कपपत्खप पतापपत्नपपत्डपपत्डपपत्कपपत्यपप

पपद्कपपद्खपपद्गपपद्घपपद्ङपपद्चप पद्छपपद्जपपद्झपपद्ञपपद्टपपद्ठप पद्डपपद्ढपपद्णपपद्तपपद्थपपद्दप पद्नपपद्नपपद्पपपद्फपपद्वपपद्भपद्मप पद्मपपद्मपद्रपपद्लपपद्ळपपद् पद्शपपद्षपपद्सपपद्हपपद्कपपद्खप पद्शपपद्जपपद्डपपद्कपपद्खप

पपन्कपपन्खपपनापपन्घपपन्डपपन्छप पन्जपपन्झपपन्ञपपन्टपपन्ठपपन्डपप पन्णपपन्तपपन्थपपन्दपपन्थपपन्नपपन्नपपन्प पन्फपपन्बपपन्भपपन्मपपन्यपपन्नपपन्त्रपपन्लप पन्ळपपन्ळपपन्वपपन्शपपन्षपपन्सपपन्हपपन्कप पन्खपपनापपन्जपपन्डपपन्द्वपपन्सपपन्यपप

पपःकपपःखपपःगपपःघपपःङपपःचपपःछप पःजपपःझपपःअपपःटपपःठपपःडपपःढप पःगपपःतपपःथपपःदपपःधपपःनपपःनपपःय पपःभपपःबपपःभपपःमपपःयपपञ्चपपःउपपःअप पःळपपःळपपःवपपःशपपःभपपःसपपःहपपःकप पःखपपःगपपःजपपःडपपःःअपपःअपपः

पपम्कपपपस्वपपमापपभ्यपपम्ङपपपन्वप पम्छपपम्जपपम्झपपम्ञपपम्टपपम्ठपपम्डप पम्हपपम्णपपम्तपपम्थपपम्दपपम्थपपम्नप पम्नपपम्पपपम्लपपम्बपपम्थपपम्पपप्यप प्रमपप्रपपम्लपपम्लपपम्लपपम्वपपम्शप पम्बपपम्सपपम्हपपम्कपपम्खपपम्गपम्जप पम्हपपम्हपपम्कपपम्यप

पपभ्कपपभ्खपपभापपभ्यपपभ्डपपभ्छप पभ्जपपभ्झपपभ्जपपभ्दपपभ्छपपभ्डपपभ्जपपभ्रप पभ्णपपभ्रपपभ्रपपभ्छपपभ्छपपभ्यपपभ्रप पभ्रपपभ्रपपभ्रपपभ्छपपभ्छपपभ्यपपभ्रप पभ्रपपभ्रपपभ्रपपभ्छपपभ्छपपभ्यपपभ्रप पभ्रपपभ्रपपभ्रपपभ्रपपभ्रप

पपम्कपपम्खपपमापपम्घपपम्ङपपम्चपपम्छप पम्जपपम्झपपम्ञपपम्टपपम्छपपम्दप पम्णपपम्तपपम्थपपम्दपपम्थपपम्नपपम्नपपम्नप पम्कपपम्ळपपम्वपपम्शपपम्षपपम्सपपम्हप पम्कपपम्खपपमापपम्जपपम्हपपम्हप पम्यपप

पपय्कपपय्खपपयापपय्घपपय्डपपय्वपपय्छप पय्जपपय्झपपय्जपपय्टपपय्छपपय्डपपय्जप पय्जपपय्बपपय्भपपय्मपप्यपप्रमपय्जप पय्कपपय्खपपय्वपपय्शपपय्भपप्यपप्यप्यप्य पय्कपपय्खपपयापय्जपपय्डपपय्डपपय्कप पय्यपप

पपर्कपपर्खपपर्गपपर्घपपर्छपपर्चपपर्छपपर्जप पर्झपपर्ञपपर्टपपर्ठपपर्डपपर्दपपर्णपपर्तपपर्थप पर्दपपर्धपपर्नपपर्नपपर्पपपर्फपपर्बपपर्भपपर्मप पर्यपपर्रपपर्रपपर्लपपर्छपपर्छपपर्वपपर्शप पर्षपपर्सपपर्हपपर्छपपर्खपपर्शपपर्जपपर्डपपर्दप पर्फपपर्यपप

पपन्कपपन्खपपनापपञ्चपपञ्चपपञ्चप पन्जपपञ्चपपन्जपपन्टपपन्ठपपन्डपपन्कप पन्जपपश्चपपन्दपपश्चपपन्तपपन्तपपन्कप पन्कपपन्वपपश्चपपश्चपपन्तपपन्हपपन्कपपन्खप पन्नपपन्जपपन्डपपन्कपपन्सपपन्तपप

पपल्कपपल्खपपलापपल्घपपल्डपपल्चपपल्छप पल्जपपल्झपपल्ञपपल्टपपल्ठपपल्डपपल्डप पल्णपपल्तपपल्थपपल्दपपल्धपपल्नपपल्नप पल्पपपल्फपपल्बपपल्भपपल्मपपल्यपपल्लप पल्रपपल्लपपल्ळपपल्चपपल्शपपल्षप पल्सपपल्हपपल्कपपल्खपपलापपल्जपपल्डप पल्सपपल्हपपल्कपपल्खपपलापपल्जपपल्डप पपळकपपळखपपळगपपळघपपळङपपळचप पळछपपळजपपळझपपळअपपळटपपळठप पळडपपळढपपळणपपळतपपळथपपळदप पळधपपळनपपळनपपळपपपळभपपळबप पळभपपळनपपळयपपळ्पपळलपपळळप पळळपपळवपपळशपपळषपपळसपपळहप पळकपपळखपपळगापपळजपपळड़प पळढपपळफपपळयप

पपळकपपळखपपळगपपळघपपळडपपळठप पळछपपळजपपळझपपळञपपळटपपळठप पळडपपळढपपळणपपळतपपळथपपळदप पळधपपळनपपळऩपपळपपपळपपळकप पळभपपळमपपळयपपळपपळशपपळलप पळळपपळळपपळवपपळशपपळषपपळसप पळहपपळकपपळखपपळगपपळजपपळडप पळढपपळकपपळखपप

पपश्कपपश्खपपश्गपपश्चपपश्डपपश्चपपश्छप पश्जपपश्झपपश्जपपश्टपपश्ठपपश्डपपश्ढप पश्णपपश्तपपश्यपपश्दपपश्धपपश्नपपश्नप पश्पपपश्कपपश्बपपश्भपपश्मपपश्यपपश्रप पश्रपपश्लपपश्ळपपश्ळपपश्चपपश्शपपश्षप पश्सपपश्हपपश्कपपश्खपपश्गपपश्जपपश्डप पश्टपपश्कपपश्यपप पञ्चततक्षेततक्षेततक्षेततक्षेततक्षेत तत्त्र्यतक्षेततक्षेततक्षेततक्षेत तत्त्र्यतक्षेततक्षेततक्षेततक्षेततक्षेत तत्त्र्यतक्षेततक्षेततक्षेततक्षेततक्षेत तत्त्र्यतक्षेततक्षेततक्षेततक्षेततक्षेत तत्त्र्यतक्षेततक्षेततक्षेततक्षेततक्षेत तत्त्र्यतक्षेततक्षेततक्षेततक्षेततक्षेत तत्त्र्यतक्षेततक्षेततक्षेततक्षेततक्षेत तत्त्र्यतक्षेततक्षेततक्षेततक्षेततक्षेततक्षेत तत्त्र्यतक्षेततक्षेततक्षेततक्षेततक्षेततक्षेतत

पपस्कपपस्खपपस्गपपस्घपपस्डपपस्डप पस्डपपस्जपपस्झपपस्ञपपस्टपपस्डप पस्डपपस्जपपस्तपपस्थपपस्टपपस्धपपस्नप पस्नपपस्पपपस्कपपस्खपपस्वपपस्थप पस्रपपस्तपपस्लपपस्कपपस्खपपस्वपपस्शप पस्षपपस्तपपस्हपपस्कपपस्खपपस्नप पस्डपपस्हपपस्कपपस्यपप

पपस्कपपस्खपपस्गपपस्घपपस्छपपस्चपपस्छप पह्जपपस्झपपस्ञपपस्टपपस्ठपपस्डपपस्ढप पह्णपप्तपपस्थपपस्यपपस्थपपह्णपप्तपपस्पप पस्कपपस्बपपस्भपपह्णपपस्यपपस्पपस्लप पस्कपपस्खपपस्थपपस्शपपस्थपपस्सपपस्हप पस्कपपस्खपपस्थपपस्जपपस्डपपस्वपपस्यपपस्तप पस्कपपस्यपप

पपक्कपपक्खपपङ्गपपङ्घपपङ्घपपङ्घप पङ्छपपङ्जपपङ्झपपङ्ञपपङ्टपपङ्घप पङ्ढपपङ्गपपङ्तपपङ्थपपङ्दपपङ्धपपङ्नपपङ्पप पङ्फपपङ्बपपङ्भपपङ्मपप पपङ्यपपङ्लपपङ्ळप पङ्पपवपपङ्शपप पपङ्षपपङ्सपपङ्हपप

less common half-forms

पपरक्रपपरखपपरगपपस्चपपरङपपस्चपपरछप पर्ज्जपपरझपपरजपपरटपपरठपपरडपपरद्धप पर्ग्णपपरतपपरथपपरदपपरथपपरजपपरमप पर्म्भपपरबपपरभपपरमपप पपरयपपरलप परळपपरभपवपपरशपप पपरश्रपपरसपपरहरपप

पपद्धकपपद्धखपपद्धगपपद्धघपपद्धङपपद्धचप-पद्धछप पद्धजपपद्धझपपद्धञपपद्धटपपद्धडप-पद्धषप पद्धणपपद्धतपपद्धथपपद्धदपपद्धधपपद्धनप-पद्धपप पद्धफपपद्धबपपद्धभपपद्धमपप पपद्धयपपद्धलप पद्धळपपद्धपपवपपद्धशपप पपद्धषपपद्धसपपद्ध-हपप

पपह्कपपह्खपपह्गपपह्घपपह्झपपह्चप-पह्छप पह्जपपह्झपपह्ञपपह्टपपह्ठपपह्डपपह्-ढप पह्णपपह्तपपह्थपपह्दपपह्धपपह्नपपह्पप पह्फपपह्बपपह्भपपह्मपप पपह्यपपह्लप पह्ळपपह्पपवपपह्शपप पपह्षपपह्सपपह्ह-पप

पपक्रकपपक्रखपपक्रगपपक्रधपपक्रङ्गपपक्रचप पक्रछपपक्रजपपक्रझपपक्रञपपक्रटपपक्रटप पक्रडपपक्रटपपक्रणपपक्रतपपक्रथपपक्रदप पक्रधपपक्रनपपक्रपपपक्रफपपक्रबपपक्रभपपक्रमप पपक्रयपपक्रलपपक्रट्यपपक्रपपवपपक्रशप पपक्रथपपक्रसपपक्रहपप

पपर्क्रपपरञ्जपपरञ्जापपरञ्जपपरञ्जप परञ्जपपरञ्जपपरञ्जपपरञ्जपपरञ्जप परञ्जपपरञ्जपपरञ्जपपरञ्जपपरञ्जपपरञ्जप परज्ञपपरख्रपपरक्रपपरख्रपपरक्षपपरक्षपपरक्षप परब्रपपरद्र्सपपरद्धपपरख्रपवपपरक्षाप परब्रपपरद्रसपपरद्धपप

पपःक्रपपःखपपःगपपःघपपःछप पःजपपःझपपःजपपःटपपःठपपःडपपःढप पःगपपःतपपःधपपःदपपःधपपःजपपःगपःप पःगपपःखपपःभपपःगपपःपपःजपपःजपपःजप पःगप्यपपःशपपःपःपःषपःजपपःजप पःगपवपपःशपपःपःपःषपः

पपञ्कपपञ्चपपञ्चापपञ्चपपञ्चपपञ्चपपञ्छप पञ्जपपञ्चपपञ्चपपञ्चपपञ्चपपञ्चप पञ्जपपञ्चपपञ्चपपञ्चपपञ्चपपञ्चप पञ्जपपञ्चपपञ्चपपञ्चपपञ्चपपञ्चप पञ्जपपञ्चपपञ्चपपञ्चपपञ्चपपञ्चप पञ्जपपयञ्चपपञ्चापप

पपज्रमपपज्रवपपजापपज्रयपपज्रमपपज्रवपपज्रथप पज्रापपज्रमपपज्रमपपज्रपपज्रपपज्रप पज्रापपज्रापपज्रमपपज्रमपपज्रमप पज्रमपपज्रमपपज्रमपपज्रमप पज्रमपपज्रमपव्रमपपज्रमपपज्रमप

पपइक्रपपइख्रपपइग्रापपइद्यपपइट्यप पइछ्रपपइज्जपपइद्यपपइञ्जपपइट्टपपइठ्यपइट्टप पइद्यपपइग्गपपइतपपइश्यपपइट्रपपइश्यपपइनप पइम्पपइफ्रपपइब्रपपइश्रपपइमपप पपइयप पइल्लपपइळ्यपपइमपवपपइशापपइश्रपपइसप पइह्रपप पपञ्कपपञ्चपपञ्चापपञ्चपपञ्चप पञ्छपपञ्जपपञ्चापपञ्जपपञ्चप पञ्चपपञ्चपपञ्चापपञ्चपपञ्चप पञ्जपपञ्चपपञ्मपपञ्चपपञ्चपप पञ्जपपञ्चपपञ्चपपञ्चपपञ्चप पञ्जपपञ्चपपञ्चपपञ्चपपञ्चप पञ्चपप

पपण्कपपण्खपपणापपण्घपपण्डपपण्चपपण्डप पण्जपपण्झपपण्जपपण्टपपण्ठपपण्डपपण्डप पण्णपपण्जपपण्यपपण्टपपण्धपपण्जप पण्कपपण्जपपण्भपपण्मपप पपण्यपपण्जप पण्ळपपण्णपवपपण्शपप पपण्जपपण्लपप

पप्रक्रपप्रखपप्रगपप्रघपप्रह्मपप्रचपप्रखप प्रजपप्रह्मपप्रजपप्रदपप्रवपप्रहमप्रदप प्रणपप्रतपप्रथपप्रदपप्रधपप्रनपप्रभप प्रक्रपप्रखपप्रभपप्रमपप पप्रयपप्रजप प्रक्रपप्रभपवपप्रशपप पप्रथपप्रसपप्रहमप

पपध्कपपध्खपपध्रापपध्घपपध्डपपध्चपपध्छप पध्जपपध्झपपध्ञपपध्टपपध्ठपपध्डपपध्डप पध्रापपध्रपपध्यपपध्रपपध्यपपध्नपपध्रप पध्रपपध्बपपध्भपपध्मपप पपध्रयपप्रलप पध्र्यपप्रमपवपपध्रापप पपध्रपपध्रसपपद्रसप

पपप्रकपपप्रखपपप्रगपपप्रघपपप्रचप पप्रछपपप्रजपपप्रझपपप्रजपपप्रटपपप्रठप पप्रडपपप्रखपपप्रणपप्रतपपप्रथपपप्रदपपप्रधप पप्रनपपप्रपपपप्रकपपप्रभपपप्रमपप पपप्रयपपप्रलपपप्रखपपप्रपपवपपप्रशपप पपप्रथपपप्रसपपप्रहपप

पपळ्कपपळवपपळापपद्यपपळः पपळ्चपपळ्ठप पळ्जपपळ्चपपळ्ञपपळ्टपपळ्ठपपळ्डप पळ्णपपळ्चपपळ्थपपळ्टपपळीपपळ्जपपळ्रप पळ्जपपळ्रमपपळ्रपपळ्यपपळ्ळपपळ्रपप पपळ्रापप पपळ्रपपळ्सपपळ्डपप